अपनी-अपनी

(काव्य-संग्रह)

पवनकुमार अग्रवाल

अपनी-अपनी

(काव्य–संग्रह)

पवनकुमार अग्रवाल

प्रकाशक

कलावती प्रकाशन

अपनी-अपनी
(काव्यसंग्रह)

पवनकुमार अग्रवाल

प्रथम संस्करण : 2021
द्वीतीय संस्करण : 2024

मूल्य : मंगल भावना

प्रकाशक :
कलावती प्रकाशन
५४, नूतन क्लॉथ मार्केट,
रायपुर दरवाजा बाहर,
अहमदाबाद – ३८००२२
दूरभाष : 079–25454497

मुद्रक :
साहित्य सेतु अकादमी ट्रस्ट
A–202, क्रिश लक्जूरिया
वस्त्राल रोड, अहमदाबाद–382418
(मो.) 9427622862

श्रद्धा समर्पण

परम पूज्य माता जी

श्रीमती कलावतीदेवी सिद्धकुमारजी अग्रवाल

बवानीखेड़ा (भिवानी) - अहमदाबाद

बहुत ढूँढ़ा नहीं लिख पाया, तेरी गरिमा में शब्द कोई ।
जो तेरी महिमा गाए, नहीं मिला ऐसा भाव कोई ॥
जन्म तुझसे, जीवन तुझसे, मंगल की हर राह है तुझसे,
तू है प्रथम विश्वविद्यालय, जिसमें पढ़ता है हर कोई ॥
सिमट जाते हैं तेरी ममता में, दुनिया के सारे शब्दकोश,
राम हो या कृष्ण, तेरे आँचल में ही पला हर कोई ॥
तू ही सृजन तू ही शाक्ति, तू ही भक्ति का रूप है,
तू ही माता अनुसूया है, तेरे चरणों में हर कोई ॥
गणेश हो या श्रवण, तेरी सेवा में सुख पावै,
तेरी सेवा ही परम भक्ति, शास्त्र यह कहता हर कोई ॥
नमन करूँ, वन्दन करूँ कोटि-कोटि प्रणाम,
मेरा मुझमें कुछ नहीं, सब तेरी कृपा का परिणाम ॥

भूमिका

तलाश : ज़िन्दगी की परिभाषा की

मनुष्य जब जीवन के बारे में सोचता है, तो उसे मन में प्रश्न होता है-

जग क्या है ?
किसलिए बना है ?
मैं क्या हूँ ?
दृश्य या दर्शक ?

ऋषि-मुनियों से लेकर आज के चिन्तकों तक यह प्रश्न जिज्ञासाजन्य है। मैं क्या हूँ ? जिन्दगी क्या है ? किसी के मन 'जीवन एक पहेली है', तो किसी के मन जीवन 'अति लघु क्षण'। जैनेन्द्रजी कहते हैं : जीवन कुरुक्षेत्र है, वही इसलिए युद्धक्षेत्र और धर्मक्षेत्र भी है। यही जीवन की जटिलता और विचित्रता है कि युद्ध को और धर्म को उसमें साथ-साथ साधना पड़ता है। इस साधना में जीवन का रूप आप ही आप धर्मयुद्ध हो जाता है। जीवन दायित्व का खेल है। पग-पग पर समझौता है। जीवन न सुखमय है, न दुःखमय, जीवन केवल जीवन है। जीवन को किसने पहचाना ? 'बज़्में जिंदगी' में 'फ़िराक' गोरखपुरी ने उचित ही कहा है-

बहुत पहले से उन कदमों की आहट जान लेते हैं।
तुझे ऐ ज़िंदगी हम दूर से पहचान लेते हैं।

टेनिसन प्रेम को ही सच्चा जीवन मानते हैं। 'Brief is Life, but Love is Long' जीवन अल्पकालीन है, किन्तु प्रेम दीर्घकालीन। भावनात्मक दृष्टि से देखने पर जीवन एक तीर्थयात्रा है। मनुष्य का दैनिक जीवन, दैनिक कर्तव्य, नौकरी-व्यवसाय ही मनष्य के लिए मंदिर है और मनुष्य के लिए धर्म। बेहतर और नेकनीयत इन्सान होने में ही जिंदगी की सफलता है।

श्री पवनकुमार अग्रवाल वैसे कपड़े के व्यवसाय से जुड़े हैं, लेकिन कबीर की तरह 'झीनी-झीनी बीनी चदरिया' को परखने में पूरी दिलचस्पी है। वास्तव में किसी आदमी की केवल व्यवसाय विशेष ही सच्ची पहचान नहीं है। हृदय की ऋजुता एवं जीवन के प्रति जागरूक दृष्टिकोण उसकी असली पहचान है। कविता का जन्मस्थान

कलम नहीं, भीगा-भीगा अंतःकरण है, भावना निमग्न हृदय है। पवनकुमार का आयास प्रयास जीवन को पहचानने के समर्पण भाव के प्रति है। उनकी प्रथम कविता उनका जीवनदर्शन एवं जगत-दर्शन है-

ज़िन्दगी के प्रति सबकी समझ अपनी-अपनी,
आस्था अपनी, रुचि अपनी, दृष्टि अपनी-अपनी
कोई धीरे, कोई तेज,
कोई मजे से चल रहा।
ज़िन्दगी की राह में
है चाल अपनी-अपनी।

कवि को अंधकार का खौफ नहीं है। इसलिए कहता है-

अंधकार में चलते-चलते
एक किरण जो मिली।
मैंने उसे पकड़ा
और सूरज तक पहुँच गया।

कवि हरिवंशराय बच्चन की प्रसिद्ध कविता 'दीया जलाना कब मना है' की पंक्ति को आधार बनाकर कहते हैं-

माना कि अंधकार बहुत है।
पर दीया जलाना कब मना है।

पवनकुमार कर्मनिष्ठ भी हैं और धर्मनिष्ठ भी। उन्होंने 'मन के आँगन' में बनाया है एक देवस्थान, जिसमें वे दूसरों के गुण, शान्ति, करुणा, प्रेम एवं पवित्रतारूपी देवत्व का दर्शन करते हैं। 'गुलदस्ता' कविता रंग-बिरंगे फूलों के संचय को एक नवीन एवं मौलिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करती है। उन्होंने 'किसी में हार, किसी में उपेक्षा, किसी में प्रताड़न, किसी में मिला तिरस्कार' और इन सभी गुब्बारों को उड़ा दिया है ऊँचे आकाश में और निहार रहा हूँ जाते हुए दूर-दूर-यह अनासक्ति भाव पवनकुमार की अपनी अलग मस्ती है।

'मंज़िल' जीवन में गतिशील रहने का संदेश देता है। धरती हमारा असली मुकाम नहीं है। मनुष्य वास्तव में इस दुनिया का मेहमान है। उसे अपने गंतव्य पर

पहुँचना है। कवि जगन्नियन्ता से पूछता है- 'तू कह दे मैं क्या करूँ ?'

जीवन है ये तेरे हवाले
चाहे जैसा जी लूँ
तू कहे तो हँस लूँ
तू कहे तो रो लूँ।

उनकी यह अहंकारशून्यता और जीवनदाता के प्रति अशेष समर्पण उनको भावना-भीगे जीवन चिन्तकों की श्रेणी में प्रतिष्ठित करता है। कवि श्री पवनकुमार अग्रवाल रचित काव्य-संग्रह 'अपनी-अपनी' काव्य-सुमनों का महकता हुआ गुलदस्ता है। इसमें प्रत्येक पुष्प का अपना-अपना रंग, अपनी-अपनी महक है।

पवनकुमार श्रद्धावादी हैं। आस्था उनकी जीवनशक्ति है। प्रत्येक कविता में कला की अपेक्षा कथ्य की प्रधानता है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर के शब्दों में ये कहते हैं-

मैं हूँ कवि,
तर्क नहीं जानता मैं।
दृष्टि मेरी देखती है,
विश्व को समग्र रूप में।

कहा गया है कि मन्दिर की परिक्रमा करते हुए भक्त जैसे देवता को ही सब ओर से देखते हैं, मन्दिर की दीवारों को नहीं, वैसे ही सच्चा कवि जीवन को ही केन्द्र में देखता है।

पवनकुमार अग्रवाल जी के पास व्यथा भी है, कथा भी है, गीत भी है और शब्द-प्रीत भी है। उन्होंने कवित्व की दीक्षा ले ली है, किन्तु उनका अंतः करण कहता है, 'अभी साधना है अधूरी-अधूरी'। उनकी कविता 'पांडित्य दर्शन' के लिए नहीं 'जीवन-दर्शन' के लिए है। इसलिए सरलता, निराडम्बरता एवं 'सपाट बयान' वाली शैली को अपनाकर पाठकों को अपना 'चिन्तन-प्रसाद' समर्पित किया है। इस भावना के साथ कि यह तो वस्तु तुम्हारी है, ठुकरा दो या प्यार करो। मैं 'अपनी-अपनी' काव्य-संग्रह का अनेकशः शुभकामनाओं के साथ स्वागत करता हूँ।

दिनांक 2 जून, 2021

- पद्मश्री डॉ० चन्द्रकान्त मेहता
पूर्व उपकुलपति : गुजरात विश्वविद्यालय
अध्यक्ष : हिन्दी साहित्य परिषद

'अर्हम'

मेरा प्रथम काव्य-संग्रह 'धरती से' के बाद दूसरी पुस्तक 'अपनी-अपनी' प्रस्तुत करते हुए आनन्द की अनुभूति हो रही है।

प्रत्येक व्यक्ति के भीतर भावों का असीम सागर हिलोरें ले रहा है। जिसमें प्रतिपल भावों की लहरें उठती रहती हैं। छोटी-बड़ी लहरें, शान्त और तूफानी लहरें, और न जाने कितनी लहरें ? मानो अलग-अलग भावों की प्रतिनिधि हैं। इन्हीं भावोंरूपी लहरों को शब्द का जामा पहनाकर कवितारूपी पुस्तक का रूप देने का प्रयास किया है।

कविता लिखना मेरी रुचि है। आनन्द है, विश्राम है, ताजगी है और आत्मबोध है।

परम पूज्य पिता जी सुश्रावक श्रेष्ठीवर्य श्री सिद्धकुमार जी अग्रवाल की पावन स्मृति एवं वन्दन करते हुए, यह पुस्तक पूज्य माता जी त्यागमूर्ति श्रीमती कलावतीदेवी सिद्धकुमार जी अग्रवाल को समर्पित है, जिन्होंने जीवन दिया तो जीवन की राह भी बताई, अँगुली पकड़कर चलना भी सिखाया तो गिरने के क्षण सहारा भी दिया। जिनकी वटवृक्षरूपी स्नेह की छाँव में पूरा परिवार अपने आपको सुरक्षित महसूस करता है।

कविताएँ लिखने के लिए स्वजनों, मित्रों, स्नेहीजनों की पावन प्रेरणा मिलती रहती है। मैं अपने पूरे बवानीखेड़ा परिवार का आभारी हूँ, जिनका सतत सहयोग एवं स्नेह मिलता रहता है।

मैं विशेष आभारी हूँ, अपनी अर्धांगिनी संगीता अग्रवाल का, जिनकी प्रेरणा एवं प्रोत्साहन से यह काव्य- गुच्छ सम्भव बना। आभारी हूँ अपने दोनों अनुज एवं उनकी संगिनी दिनेश-रीनू अग्रवाल एवं राजेश- माधुरी अग्रवाल, आत्मज ध्रुमिल, आत्मजा कीर्तियशा एवं भतीजे शुभम, तन्मय एवं हर्षवर्धन का, जिनका स्नेह एवं शुभकामनाएँ जीवन की प्रेरणा है।

परम पूज्य गुरुदेव प्रेक्षा प्रणेता आचार्य श्री महाप्रज्ञ को कोटिशः वन्दन करते हुए कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ, जिनके आशीर्वाद एवं साहित्य से जीवन को समझने का अवसर मिला। वन्दना एवं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ महातपस्वी परम पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री महाश्रमण जी को, जिनके स्मरण मात्र से नव ऊर्जा का संचार होता है।

मैं आभारी हूँ सभी इष्टमित्रों, स्नेहीजनों का, जिनका स्नेह सिंचन पाकर 'अपनी-अपनी' पुस्तक-सृजन की प्रेरणा मिली।

मैं आभारी हूँ भारत के प्रसिद्ध साहित्यकार हिन्दी एवं गुजराती के मूर्धन्य लेखक, गुजरात विश्वविद्यालय के पूर्व उपकुलपति एवं हिन्दी साहित्य परिषद के अध्यक्ष पद्मश्री डॉ० चन्द्रकान्त मेहता जी का, जिन्होंने आशिर्वचन लिखकर मुझे अनुग्रहीत किया, प्रोत्साहित किया।

मैं आभारी हूँ हिन्दी साहित्य परिषद के पूर्व उपाध्यक्ष स्व० डॉ० रामकुमार गुप्त का, जिन्होंने मेरी पहली पुस्तक 'धरती से' के सृजन में अपना विशिष्ट मार्गदर्शन दिया था। उनसे क्षमायाचना करता हूँ कि पूर्व पुस्तक में उनका नामोल्लेख रह गया था।

मैं आभारी हूँ श्री कमलापति त्रिपाठी जी का, जिन्होंने शब्दों को सजाकर इन कविताओं को मूर्त रूप दिया।

-पवनकुमार अग्रवाल

अनुक्रम

1.	अपनी-अपनी	13
2.	चम्पा ! तुम यूँ ही झरते रहो	14
3.	मिल गया	15
4.	मीनारें	16
5.	जाना है	17
6.	वृद्धाश्रम	18
7.	भाग रहा है	19
8.	कब मना है?	20
9.	दर्शन	21
10.	मेरा	22
11.	आसमान से गिरा	23
12.	पहुँचूँगा कब?	24
13.	यह दिल खोलूँ	25
14.	तुम	26
15.	कोई-कोई	27
16.	राह	28
17.	पंख	30
18.	भई ! सावन आयो	31
19.	ऋणी	32
20.	किसके भरोसे?	33

21. खबर-बेखबर 34
22. रास्ते 35
23. तुम मत बोलो। 36
24. ममता 37
25. महावीर को आना होगा 38
26. मैं कौन हूँ? 39
27. देखूँ 40
28. खबरें 41
29. छीड़ 42
30. कृतज्ञता 43
31. गुलदस्ता 44
32. भिन्न-भिन्न 46
33. क्या दिया? 47
34. ज़िन्दगी की गाड़ी 48
35. किरदार 49
36. इलाज 50
37. कोई क्या करे? 51
38. गज़ब हो गया 52
39. जल 53
40. गीत गाता है 54
41. बीज 55
42. यहाँ ज़िन्दगी में 56

43. काया 57
44. बन जाऊ 58
45. मनुज 59
46. नहीं मिला 60
47. चल रहा हूँ 61
48. वक्त 62
49. विकृति 63
50. बड़े 64
51. मेट्रो 66
52. आपको क्या? 67
53. महासागर 68
54. प्रतिष्ठा 69
55. संकल्प 70
56. बात 71
57. दुकान 73
58. चुप रहना जीवन है 75
59. सन्देश 77
60. क्या हुआ? 78
61. ताश का खेल 79
62. हर कोई 81
63. काम करें भैया? 82
64. पलता है 83

65. बसेरा 84
66. मेरा नगर 85
67. कविता को 86
68. आपने तो 87
69. मायाजाल 88
70. सिखाता है 89
71. अलग बात है 90
72. बचाते हैं 91
73. प्रतिनिधि 92
74. होड़ 94
75. कोरोना एक सन्देश 95
76. जीवन 97
77. धन की गति 98
78. देश की शान 100
79. विसर्जन 101
80. चला गया 102
81. जीवन सारा है 103
82. तुम यूँ ही याद आते हो 104
83. ख्वाहिशों का भार 105
84. गिलहरी (खिसकोली) 106
85. चाहेंगे ही 107
86. क्या पता? 108

87. मंज़िल 109
88. नया आदमी 111
89. स्वीकार 113
90. बीज 115
91. तू कहे तो 117
92. एम्ब्यूलन्स 118
93. वफादार 119
94. कौन? 120
95. मत करना 121
96. डर लगता है 122
97. अलग-अलग 123
98. आओ, ज़िन्दगी हम बात करें 125
99. नहीं देखा 126
100. महावीर मार्ग 127

*

अपनी-अपनी

ज़िन्दगी के प्रति सबकी, समझ अपनी-अपनी।
आस्था अपनी, रुचि अपनी दृष्टि अपनी-अपनी ॥

कोई नेता, कोई अभिनेता, अपने-अपने अभिनय हैं।
जीवन की रंगभूमि में, कला अपनी-अपनी ॥

कोई धीरे, कोई तेज, कोई मजे से चल रहा।
ज़िन्दगी की राह में है, चाल अपनी-अपनी ॥

कुदरत ने तो खिलाए हैं, भाँति-भाँति के फूल।
ज़िन्दगी के बाग में है, महक अपनी-अपनी ॥

यूँ तो ईश्वर एक है, नाम अलग-अलग हैं।
परम तक पहुँचने की है, राह अपनी-अपनी ॥

कहीं हादसे, कहीं वाक्ये, कहीं वाद-विवाद है।
क्रिया तो एक है, प्रतिक्रिया अपनी-अपनी ॥

कहीं प्यार से, कहीं हँसकर, कहीं जोर से हो रही।
ज़िन्दगी में कहने की है, बात अपनी-अपनी ॥

कहीं दान, कहीं भण्डारा, कहीं पे ज्ञान बँट रहा।
ज़िन्दगी में देने की सौगात अपनी-अपनी ॥

लेने के लिए सब दे रहे, कोई निःस्वार्थ भी।
कुछ पाने और खोने की है, चाह अपनी-अपनी ॥

चम्पा ! तुम यूँ ही झरते रहो

सन्ताप समस्त विश्व के हरते रहो।
चम्पा ! तुम यूँ ही झरते रहो ॥

यत्र-तत्र-सर्वत्र फैला दुःखों का जाल,
समस्याएँ बनती जा रहीं जी का जंजाल।
भागते-भागते मानव हो गया है बेहाल,
जीवन की समस्याओं का समाधान करते रहो।
चम्पा ! तुम यूँ ही झरते रहो ॥

हर कोई हो गया बे-रंग-सा,
व्यवहार सबका हो गया बेढंग-सा।
दिल यहाँ हो गया है तंग-सा,
उदासीन मनों में रंग तुम भरते रहो।
चम्पा ! तुम यूँ ही झरते रहो ॥

हर घर में चिन्ताएँ और दिमाग में तनाव,
कलुषित हो रही भाव-भंगिमा और विचित्र हाव-भाव।
सर्वत्र माया की धूप है और अशान्ति के हैं घाव,
सबके ऊपर शान्ति की छाँव तुम करते रहो।
चम्पा ! तुम यूँ ही झरते रहो।

बढ़ रही है हिंसा, हो रहा ह्रास प्रकृति का,
सम्बन्ध हो रहे 'यूज एण्ड थ्रो', हो रहा ह्रास संस्कृति का।
जो सँजोई सदियों से, हो रहा ह्रास मानवता की आकृति का,
करुणा की खुशबू से तुम दामन सबका भरते रहो।
चम्पा ! तुम यूँ ही झरते रहो ॥

मिल गया

अन्धकार में चलते-चलते,
एक किरण जो मिली।
मैंने उसे पकड़ा,
और सूरज तक पहुँच गया ॥

रेगिस्तान में तलाशते तलाशते,
एक सूखा नाला जो मिला।
मैंने पकड़ा उसका किनारा,
और समुद्र तक पहुँच गया॥

बीहड़ वन में भटकते-भटकते,
एक पगडण्डी जो मिली।
मैंने उसे पकड़ा,
और राजमार्ग मिल गया ॥

संसार-समुद्र में तिरते-तिरते,
आस्था की जो नाव जो मिली।
मैं बैठा उसमें,
और भवसागर तर गया ॥

परम को तलाशते-तलाशते,
भक्ति का छोर जो मिला।
मैं उस पर चलता रहा,
और भगवान मिल गया ॥

मीनारें

जिनसे कोई उम्मीद नहीं, मिल जाते हैं सहारे।
गैरों से तो जीत गए, पर अपनों से हारे ॥

ग़ाफ़िल मत हो राही, कि कट गया है सफर।
कभी-कभी पास आकर भी मिलते नहीं किनारे ॥

यूँ तो सब लेकर आते हैं, अपनी-अपनी तकदीर।
कुछ होते हैं सिकन्दर, कुछ किस्मत के मारे॥

घर पर, दर पर और हर तरफ देखा है प्यारे।
यहाँ तो हुस्न के इर्द-गिर्द ही घूमते हैं सारे॥

इस जहाँ में सब दिखाते हैं अपना-अपना रुआब।
कुछ दिखते जरूर हैं, पर होते नहीं वे न्यारे ॥

जानती हैं वे किसके दम पर खड़ी हैं यहाँ।
इसलिए नींवों को सलाम करती हैं मीनारें ॥

एक पतझड़ से क्यों सहमी हुई है ज़िन्दगी।
फिर से तुझे खिलाने, आती रहेंगी बहारें ॥

स्वयं खुश रहो और सभी को रखो।
यही बस दिलों को आदेश हैं हमारे ॥

जाना है

अब तक खूब बटोरा, अब बाँटकर जाना है।
यहाँ का हिसाब यहीं पर पूरा करके जाना है।

क्या लेकर के आए थे? क्या लेकर के जाना है?
सबसे सहयोग मिला है, सहयोग देकर जाना है।

राग-द्वेष से चित्त भरा, स्वार्थ भरा व्यवहार किया,
क्षमा सबको करके, क्षमा लेकर जाना है।

कुछ लेकर के आए हैं, कुछ यहाँ अर्जित किए,
जो भी हुए हैं संचित, कर्मों को यहीं रिताना है।

यूँ तो नहीं चाहा मैंने, किसी के दुःख में निमित्त बनूँ,
जो हो गए हैं उदास, उन्हें मुस्कान देकर जाना है।

अलग-अलग रिश्तों में यहाँ, सबसे मुलाकात हुई,
हर रिश्ते को आनन्दमयी, याद देकर जाना है।

सहज, सरल मिली ज़िन्दगी, पाकर उसे जटिल किया,
जीवन की राहों को, आसान करके जाना है।

व्यक्ति और स्थितियाँ, प्रिय और अप्रिय मिलीं,
ज़िन्दगी में सबको स्वीकार करके जाना है।

वृद्धाश्रम

मैं आज,
वृद्धाश्रम...हूँ आया।
बुजुर्गों को एकाकी, निस्तेज, उपेक्षित देख
उन्हें जीवन समेटने की तैयारी में पाया...
उनकी लाचारी देखकर,
एक ख्याल अनायास ही मन में आया...
बुजुर्ग ही नहीं...
हमने क्या-क्या नहीं इस जगह पहुँचाया...
हमारी भाषा... हमारी बोली...
गीत-संगीत...
खानपान, वेशभूषा...
रीति-रिवाज, कलाएँ...
त्यौहार, उत्सव व परम्पराएँ...
एक-एक करके हम,
पूरी विरासत को ही,
वृद्धाश्रम में भेज रहे हैं...
और उसके सिमटने का,
इन्तजार कर रहे हैं...
फिर उस पर फिल्म बनाएँगे
उसे पाठ्यपुस्तकों में समाएँगे
उसका बखान करेंगे
फिर...फिर
वे सब इतिहास के पन्ने बन जाएँगे।

भाग रहा है

बचपन में खड़े होकर
ज्यों-त्यों छोटे कदम
बढ़ाए...
भागने की आदत
हो गई...
कभी खिलौनों के पीछे...
तो कभी तितलियों के पीछे...
कभी कुत्तों, गिलहरियों के पीछे...
फिर पढ़ाई के पीछे...
और कमाई के पीछे...
फिर पद और प्रतिष्ठा के पीछे...
कभी इसके पीछे...
कभी उसके पीछे...
भागता ही जा रहा हूँ
भागता ही जा रहा हूँ
पता नहीं कहाँ तक दौड़ाएगी,
ये मृगतृष्णा...॥

कब मना है?

माना कि अन्धकार बहुत है,
पर दीया जलाना कब मना है?
ठोकर खाकर गिर गए पर
उठकर चलना कर मना है?

चहुँ ओर निराशाओं का पानी
भूमि नहीं दिखे जानी पहचानी
पर इसमें भी आशाओं की
नाव चलाना कब मना है?

सूना पथ और लम्बा रास्ता
साथ नहीं कोई जिससे हो वास्ता,
माना हम अकेले हैं घर पर
पर स्वजन बनाना कब मना है?

यहाँ-वहाँ पर दुःख है फैला
पर दुःख भोगता मनुष्य अकेला
दुःख किसी का हर न सको
तो सुख देना कब मना है?

धन्य हैं वे जो सेवा करते
कुछ करते हैं, कुछ करवाते
अवसर तुमको नहीं मिला
तो अनुमोदन करना कब मना है?

दर्शन

मैंने बनाया है
एक मन्दिर
मन के आँगन में
और देवस्थान में
प्रतिष्ठित किए हैं
दूसरों के गुण
एवं शान्ति, करुणा, प्रेम
अहिंसा, सहिष्णुता, आनन्द
परस्परिता एवं पवित्रतारूपी देव
उनके दर्शन करता हूँ प्रतिदिन
और हाँ उसमें बनाया है
एक हवनकुंड
जहाँ जलाता रहता हूँ
अहंकार, तिरस्कार, द्वेष
ईर्ष्या, क्रोध, नशा, मृषा
मेरा और दूसरों का
इन दोनों जगह
पर हर-रोज जाता हूँ
और फिर बाहर आकर
खुद को नया
पाता हूँ...।

मेरा

एक छोटी सी झलक तेरी,
और मुस्कुराता-सा दिन मेरा।
तेरी याद आ जाने से ही,
पुलकित हो जाता दिल मेरा।

संदेश तेरा जो लेकर आती,
वह हवा लगती सुहानी-सी।
जब बोली तेरी छूती तन को,
रोमांचित हो जाता मन मेरा।

जब कभी तू मुझे पुकारे,
रोम-रोम हर्षित होता।
और बतियाता पास में आता,
धन्य हो जाता क्षण मेरा।

जब कभी तू साथ में चलता,
राह जानी-पहचानी लगती है।
मैं निश्चित हो जाती हूँ
पुष्ट हो जाता विश्वास मेरा।

जब तुम नजदीक हो आते,
लगता ये जीवन हरा-भरा।
और स्नेह से आगोश में लेते,
हो जाता सफल जन्म मेरा।

आसमान से गिरा

सुना था आसमान से गिरा
खजूर पर अटका
पर उस दिन उँची बिल्डिंग
से गिरा वह मजूर
पर कहीं नहीं अटका
कृष्ण ने तो उठाया था
गोवर्धन अंगुलियों पर
राम ने भी राक्षसों का
वध किया
हनुमान ने भी रक्षा की
और जला दी लंका
पर इन मकानों से
गिरने वालों को
कोई नहीं बचाता
न ही वो बचाता है
न ही वो बच पाता है।

पहुँचूँगा कब?

कुछ मेरे पीछे लगे हैं
उनसे छुड़ा रहा हूँ पीछा
कुछ भोग रहा हूँ
पर कुछ के पीछे मैं
स्वयं लगा हूँ
प्रमादवश... भोगवश
उनसे मैं छुड़ाऊँ
पीछा अब
पता नहीं मंज़िल
पर पहुँचूँगा कब?
पहुँचूँगा कब?

यह दिल खोलूँ

यह दिल खोलूँ।
फिर कुछ खो-लूँ ॥
एक बात मैं बोलूँ।
फिर कुछ बो-लूँ ॥
राम नाम की मिश्री घोलूँ।
जीवन के हर पाप को धो-लूँ ॥
टोलू-मोलू-गोलू-रोलू।
व्यर्थ की बातों को रो-लूँ।
धीरे-धीरे होलू-होलू
स्नेह सदन की राह को हो-लूँ।
व्यर्थ किसी की परतें छोलूँ।
ऐसी बातों की मैं छो-लूँ ॥

तुम

तुम चले जाओगे
पर पुनः यहीं आओगे।
हर सुबह सूरज की
तरह उग आओगे
इस मन आँगन को चमकाओगे...
और उस बाग में खिले हुए फूलों
की महक को अपने आगोश में लेकर
पूरे जहाँ को महकाओगे...
तुम चले जाओगे...।
भरी दुपहरी में
अमराई की छाँव बनकर
इस घर को शीतल कर जाओगे...
तुम चले जाओगे...।
फिर संध्या की लालिमा
बन पिछवाड़े से आकर मुझे बाँहों में
लेकर खूब मुस्कुराओगे...।
तुम चले जाओगे...।
और फिर रात्रि में कभी चाँद कभी तारे
बनकर उसकी चाँदनी
में मुझको नहलाओगे
इस तन-मन को सहलाओगे
तुम चले जाओगे...।

कोई-कोई

लिखने वाले लिखते हैं,
उसको पढ़ते सब कोई।
पर उसमें क्या लिखा है,
वह पढ़ता है कोई-कोई।

कहने वाले कहते हैं,
सुनने वाला हर कोई।
पर वह क्या कह रहा,
वह सुनता है कोई-कोई।

करवाने वाले करवा रहे,
करने वाले कर रहे।
पर वह क्या करवा रहा,
यह जानता कोई-कोई।

कोई इशारा कर रहा,
उसे देखता हर कोई।
पर किस बात का है,
उसे समझता कोई-कोई।

दिखाने वाला दिखाता है,
उसे देखता हर कोई।
पर क्या दिखाना चाहता,
उसे देखता कोई-कोई।

राह

चलते-चलते रुक गया।
एक तरफ सुख की गली थी।
एक तरफ दुःख की...।
कुछ भटका और आगे बढ़ा।

फिर
एक ओर प्रिय का मार्ग
दूसरी ओर अप्रियता का...।
फिर अग्रसर हुआ।

इस ओर मान का रोड था
उस ओर अपमान का...
उद्धत हुआ।

यहाँ मित्रता की सड़क थी,
तो वहाँ शत्रुता की...
पुनः चलना था।

दाएँ हर्ष का कुआँ था,
तो बाएँ शोक का...।

आगे बढ़ा,
तो मिली अनुकूलता,

और प्रतिकूलता की राह...
कहीं समृद्धि की बिल्डिंगें।
कहीं कंगालों की झोपड़ियाँ...
कहीं आसक्ति की सड़क,
कहीं विरक्ति की...
आती रहीं अलग-अलग,
गलियाँ-कूचे मार्ग
कभी कहीं थमता.
कभी कहीं रुकता।

फिर आ गया
राजमार्ग पर।
और चलता रहा, चलता रहा...।
मुझे मुकाम पर जो
पहुँचना था।

पंख

इस जहा में
जिसको भी लग
जाते हैं पंख
फिर वो उड़ते रहते हैं
ऊँचाइयों पर
बौने लगते हैं उन्हें
फिर आसपास के लोग
कोशिश करता रहता है
वह और बड़े पंखों वाला
बनने का।
ताकि उससे ऊपर
उड़ने वाले से भी
ऊपर उड़ सके
अकेला रह जाता है कभी
तो कभी मिलता अपने जैसा
असीम आकाश में
कितना उड़ेगा...
थककर... हारकर
फिर आता धरती पर
पाने को विश्राम...।

भई ! सावन आयो

भई ! सावन आयो।
रिमझिम रिमझिम पानी बरसे
हरा रंग चहुँ ओर है छायो।

श्याम झूला झुला रहे,
झूले श्यामा प्यारी।
मन्द-मन्द मुस्काए कान्हा
लगे युगल छवि न्यारी।

मुँह में पान का बीड़ा
छेड़े राग मल्हारी।
बंसी की धुन सुनकर,
सुध-बुध खोए नर-नारी।

दिव्य अलौकिक दृश्य चहुँ ओर
खिली है प्रेम फुलवारी
कोटिक जन्म न्यौछावर इस पर
जाऊँ मैं बलिहारी।

ऋणी

उसने मेरी निन्दा की,
मुझे गाली दी
मैं ऋणी हो गया।
उसने मुझ पर गुस्सा किया
मेरी उपेक्षा की,
मेरा तिरस्कार किया
मेरी राह में पत्थर डाले
कीचड़ उछाला
धोखा दिया
झूठा मुकदमा किया
मेरी बदनामी की
घृणा की
व्यंग्य किया
मैं ऋणी होता जा रहा हूँ।

किसके भरोसे ?

कम्पनियाँ, कारखाने,
बिल्डिंग, प्रिमाइसिस,
कार्यालय, मार्केट,
फ्लैट, सोसायटी, बँगले,
बाग-बगीचे, सड़कें,
स्टेशन, एयरपोर्ट,
बन्दरगाह,
नगर, राज्य,
देश की सीमाएँ,
जहाँ चलती रहती हैं,
चौकीदारी-सतर्कता
सुरक्षा,
और संस्कार
सभ्यता-भाषा,
उत्सव,
सात्विक परम्पराएँ,
सम्बन्ध
विश्वास,
खानपान
वेषभूषा,
पता नहीं
किसके भरोसे है ?

खबर-बेखबर

आज सुबह अखबार पढ़ते-पढ़ते
बड़ी खबरों के बीच
कहीं कोने में दबी
एक छोटी-सी खबर पर
मेरी नजर पड़ी
हाँलाकि मेरे लिए वह
खबर थी बहुत बड़ी।

बड़ी खबरों के बीच
रोज न जाने कितनी
खबरें दबी रह जाती हैं
या अनछपी हो जाती हैं
कभी छपी, कभी अनछपी
रह जाती है ये खबर
और उससे आम आदमी
रह जाता है बेखबर।

रास्ते

इस घर को
उस मकान से
विशाल बँगले से
दूर के फ्लैट
उस उँची बिल्डिंग
इन झोपड़ियों
वह आश्रम और भवन
छोटे-बड़े कार्यालय
दुकान और हाउस
अस्पताल, चिकित्सालय
धर्मस्थान,
टावर, निवास,
सरकारी इमारत
फैक्टरी, श्रम संस्थान
तक
इन सबके हैं
अपने-अपने वास्ते
पर इनको एक दूजे
से मिलाते हैं
ये खाली-खाली रास्ते।

तुम मत बोलो।

तुम मत बोलो
तुम्हारे मौन को बोलने दो
इन आँखों को जताने दो
कहने दो भाव भंगिमा को
सुनाने दो तुम्हारे सौंदर्य को
बोलने दो प्यारे अस्तित्व को
बताने दो न्यारी मुस्कानों को
तुम मत बोलो।

तुम जो चलते हो... वह भी कुछ कहता है
तुम जो खाते हो... वह भी कुछ कहता है
तुम कुछ जताते हो... वह भी कुछ कहता है
तुम कुछ ध्याते हो... वह भी कुछ कहता है
तुम मत बोलो।

कुछ करते हो
कुछ छूते हो
श्वास लेते हो
कुछ लिखते हो
सब कुछ बोलता है
तुम मत बोलो,
तुम्हारे मौन को बोलने दो

(परम पूज्य गुरुदेव शान्तिदूत आचार्य श्री महाश्रमण जी को समर्पित)

ममता

बस जगते ही...
वह लग जाता था पीछे-पीछे
"मम्मी-मम्मी, आज नई ड्रेस
पहनकर स्कूल जाऊँगा,
घर आकर, शाम को ये खाऊँगा
फिर मेरे दोस्त के साथ,
घूमने जाऊँगा,
और हाँ आज-
टीचर ने शाबाशी दी कि,
अव्वल रहा यूँ ही, तो स्कूल से
पारितोषिक पाऊँगा।"

अब मम्मी घूमती है पीछे-पीछे,
"बेटा कहाँ जा रहे हो?
कब आओगे?
ट्यूशन कब जाओगे?
आज घर खाओगे
या बाहर जाकर खाओगे?
और हाँ, तुम्हारी वह शर्ट,
मैं लाऊँ?
या तुम खुद लाओगे?"
पहले बच्चा माँ के पीछे
अब माँ बेटे के पीछे-पीछे जाती है
ममता जताती है।

महावीर को आना होगा

हिंसा से आक्रान्त विश्व को, शान्ति सन्देश सुनाना होगा।
अब पुनः इस धरती पर, महावीर को आना होगा।

फैला रहा परस्पर वैमनस्य, मिटा रहा है भाईचारा,
सीमाओं में बँधा है मानव, बन गया है स्वार्थ का मारा,
आक्रमण की भाषा बोले, बना इक-दूजे का हत्यारा,
मूढ़ बन गए मानव को, मित्रता का पाठ पढ़ना होगा।
अब पुनः इस धरती पर, महावीर को आना होगा।

असत्य का प्रभाव चहुँ ओर, सत्य सूर्य पर बादल छाए,
जो मेरा है वही सत्य है, इस आग्रह के बोझ को ढाए,
सहज सरलता छिप गई है, मन को इधर-उधर भटकाए,
अटक, भटक के इस जंगल में, अनेकान्त की राह बताना होगा,
अब पुनः इस धरती पर, महावीर को आना होगा।

स्नेह निर्झर सूख रहा है, सिमट रही संवेदना,
नष्ट कर रहा पर्यावरण को, नहीं होती है वेदना,
निर्दयी जीवों को काट रहा है, सो रही परार्थ की चेतना,
संवेदनहीन इस जगती को, करुणा का राग सुनाना होगा।
अब पुनः इस धरती पर, महावीर को आना होगा।

मैं कौन हूँ?

आगे नहीं बढ़ा
मैं पीछे मुड़ गया
उस राह से...
पता नहीं क्या?
पता चल जाए
कि मैं कौन हूँ?
क्यों आया?
क्या करना मुझे,
और फिर जो
कर रहा हूँ
उससे विमुख
होना पड़े
जो है पंसदीदा बातें
उनसे हाथ धोना पड़े।
मालूम हो कि
जो कर रहे हो...
वही नहीं
तुम्हें कुछ और करना है
जीवन के इस पात्र में
कुछ और भरना है।

देखूँ

वायदा तो किया कि पार उतारूँगा,
इस समुन्दर में नाव चलाकर तो देखूँ।

बहुत इतराती है वो अपनी खूबसूरती पर,
एक बार उसे दर्पण दिखाकर तो देखूँ।

जो बने घूम रहे हैं बड़े-बड़े भगवान,
एक बार उनको भी भक्त बनाकर तो देखूँ।

क्या समझेंगे ये छप्पन भोग खाने वाले,
कभी इनको भी उपवास करवाकर तो देखूँ।

बहुत नाज़ है उनको अपनी बुलन्दियों पर,
इन पर्वतों को कुछ देर झुकाकर तो देखूँ।

बहुत बढ़ रही हैं गर्मियाँ दिलो में, दिमाग में,
इस चाँद को धरती पर लाकर तो देखूँ।

वक्त-बेवक्त जो परेशान करते हैं,
थोड़ी देर उनको भूलाकर तो देखूँ।

बड़ी मिन्नतों से मिले हैं आप हमें,
ये बात उनको बताकर तो देखूँ।

जो निकालते हैं नुक्स और देते सलाह,
कभी प्रधानमंत्री उनको भी बनाकर तो देखूँ।

जो बढ़ा देते हैं बोझ और दिल की धड़कनें,
उन ख्यालों को एक बार हटाकर तो देखूँ।

खबरें

कार्यालय से निकलकर
घर जाते-जाते सोचा
आज तो दिन अच्छा है
टेलीविजन पर मिलेंगी
अच्छी-अच्छी खबरें
मानवता के आयोजन
और सुखाकारी के संवाद
और मिलेंगी भाईचारे की कहानियाँ
प्रगति की निशानियाँ
पर ज्यों ही शुरू किया
टेलीविजन...
वही लूटपाट-चोरी
हत्या-बलात्कार-हिंसा
जान हानि-अकस्मात
भ्रष्टाचार-दलबदल
बनावट-सजावट-दिखावट
और फिर गिरावट
के नित्य नए आयाम
मुझे लगता है
हर अगला दिन
पिछले को अच्छा बता रहा है
और प्रगति और स्वार्थ के नाम पर
मानव खुद को ही मिटा रहा है।

छीड़

यत्र-तत्र-सर्वत्र
ट्राफिक जाम और भीड़
सड़कों से लेकर
गली-कूँचों तक
धर्मस्थानों में, बाजारों में,
अस्पतालों में, रेस्तराँ में,
सिनेमा हॉल और मॉल में,
कोर्ट-कचहरी, कार्यालय
बाग-बगीचे और वाहनों में
हिल स्टेशन और
समुद्र के किनारे पर
टी.वी., इन्टरनेट,
अखबारों में,
कार्यक्रमों की सूचनाओं,
विज्ञापनों की भीड़,
आदमी के भीतर भी,
चल रही है
विचारों की भीड़,
कब होगी उसके
मन में छीड़।

कृतज्ञता

सुबह उठते ही,
मैंने स्विच ऑन किया
और ट्यूबलाइट जलाई
किसी ने दूध दिया
किसी ने नाश्ता और चाय पिलाई
किसी ने कपड़े दिए
कहीं से आया अनाज
कहीं से खान-पान
किसी की मेहनत से ये मकान बना
किसी के सहयोग से कमाई
सरकार ने उपलब्ध करवाई,
ये सड़क, बिजली, बाग-बगीचे,
पानी, गटर, सुरक्षा
और न जाने क्या-क्या?
किसी ने मनोरंजन दिया
किसी ने करवाई यात्रा
किसी ने दी शिक्षा
तो किसी ने चिकित्सा
सबके सहयोग से
मेरा जीवन मढ़ा
पर मैंने कृतज्ञता का पाठ
कभी नहीं पढ़ा।

गुलदस्ता

एक फूल जन्मदिवस के उत्सव का
एक गुल परीक्षा में अव्वल आने का
एक पुष्प उस पारितोषिक को जीतने का
एक सुमन उन पहाड़ी वादियों में घूमने का
एक प्रसून दोस्तों के संग मस्ती का
एक कुसुम शादी के जश्न का
एक पद्म धार्मिक यात्रा का
एक शतदल बच्चों संग खेलने का
एक शतपत्र परिवार संग त्यौहार उत्सव का
एक गप्पेबाजी, एक बागवानी
एक मित्रों की महफिल का, मस्ती का
गीत-संगीत का ध्यान का
निश्चिन्तता का खिलखिलाने का
यूँ सजाया है गुलदस्ता
रंग-बिरंगे फूलों का
और ले रहा हूँ खुश्बू
हर पल हर समय
और हाँ-
मैंने फुलाए हैं कुछ गुब्बारे
किसी में चिन्ता, किसी में असफलता
किसी में मिली धोखाधड़ी

किसी में प्राप्त निराशा, हताशा
किसी में बातों के तनाव
किसी में हार, किसी में उपेक्षा
किसी में ऊल-जुलूल विचार
किसी में प्रताड़न
किसी में मिला तिरस्कार
और इन सभी गुब्बारों
को उड़ा दिया है
ऊँचे आकाश में
और निहार रहा हूँ
जाते हुए दूर-दूर...।

भिन्न-भिन्न

किसी में सुगन्ध है, किसी में है रूप
कोई है मृदु, कोई है खिला
पर गुलशन में किसी को
किसी से शिकायत नहीं।

ये जंगल, ये पर्वत, ये नदियाँ, ये झरनें,
सबका है सहअस्तित्व,
पर कोई तुलना नहीं
ये जानवर, ये पक्षी, ये जलचर,
मस्त हैं अपने आप में पर कोई अभिमान नहीं।

हर कोई व्यस्त है
अपने आप में, अपने काम में
मनुष्य न जानें क्यों
कोई छोटा, कोई बड़ा,
कोई अमीर, कोई गरीब,
कोई ऊँच, कोई नीच,
कोई बलवान, कोई कमजोर,
मतभेद, अहंकार, कहीं लघुताग्रंथि,
कहीं है गुरुताग्रंथि,
इस सृष्टि में न कोई अतिरिक्त न कोई हीन
बस ये हैं प्रभु के बनाए भिन्न-भिन्न।

क्या दिया?

किसी ने दूध दिया
किसी ने दिए खिलौने
किसी ने दी शिक्षा
तो कहीं से आया अनाज
किसी ने दिए कपड़े
कितनी महेनत से बिजली मिली
कितनों के पसीने से मिला ये सब खान-पान
किसी ने करवाई यात्राएँ,
किसी ने दिया मनोरंजन,
कितनो नें दी कमाई,
कितनों की मेहनत से मकान मिला
कितनों ने मान, प्रतिष्ठा
और सहयोग दिया
ये नगर, ये बाग-बगीचे
ये चिकित्सा, ये मंदिर
ये मस्जिद, ये सुरक्षा
ये वाहन, ये सवारी
ये खेल-कूद और सुन्दरता
ये एक-एक श्वास
सब कुछ दूसरे देते हैं,
और सोचते हैं हमने कमाया है
मैंने क्या-क्या नहीं लिया?
पर सामने क्या दिया?

ज़िन्दगी की गाड़ी

सड़क पर,
कभी ट्राफिक जाम,
कहीं गड्ढे, कहीं बम्प,
स्पीड ब्रेकर,
कहीं रोंग साइड,
में कोई आता है
कभी कोई ओवरटेक
कर जाता है
कहीं रुक जाती है
लालबत्ती पर
कहीं पर देखकर
साइड लेनी पड़ती है
कभी-कभी खुली
चौड़ी सड़क, राजमार्ग मिलता है
कहीं मौसम का मिजाज,
कहीं किसी ऑफिसर की आवाज,
कभी किसी को गाड़ी छू गई
कहीं टक्कर...
कहीं रुकावट, कहीं गति,
कहीं पंचर, कहीं इंजन में खराबी,
कहीं अकेला, कहीं संग लाड़ी,
यूँ ही चल रही है,
ज़िन्दगी की गाड़ी।

किरदार

यह जो जीत गया
वह जो मधुर गा रहा है
यहाँ जो प्रथम आया है
उसे जो सम्मान मिल रहा है
उसका श्रेष्ठ सौन्दर्य जो है
वहाँ जो सफल व्यवसायी है
हूँ, ये जो अव्वल कलाकार है
और वो जो सदा बहार है
ये जो देश का नेता है
वो जो लोकप्रिय अभिनेता है
ये वैज्ञानिक और वह धर्मगुरु
ये साहित्यकार, वो खिलाड़ी वह सब मैं ही हूँ।

बस अलग-अलग रूप में हूँ
मैं कहाँ-कहाँ किरदार निभाता
उन्होंने अपने जिम्मे ले लिया है
मेरा काम और मुझे दिया है थोड़ा आराम।

और इसी तरह उस पीड़ित, इस दर्दी,
उस बन्दी, इस दुःखी, ये रोगी, वो लाचार,
उस चिन्तित, उस बँधुआ, ये यतीम, वो विरही
इन्होंने ले लिया जिम्मे काम
लेकर प्रभु को मेरा नाम

इलाज

जितने भी रोग हैं. उन सबका है इलाज।
डॉक्टरों की फीस, यहाँ पर है लाजवाब ॥

कहते हैं कुछ मर्ज, होते हैं लाइलाज।
दवा तो उपलब्ध है, हम ढूँढ़ नहीं पाए जनाब ॥

माध्यम कोई बनता है, कोशिश का है प्रसाद।
चिकित्सा कोई करता है, ठीक करता है, वह उस्ताद।

मत समझ व्यर्थ, इसे मेरे सरताज।
हर चीज यहाँ दवा है, जो करती है इलाज ॥

दर्दी की वेदना तो, उसे भी पीड़ा देती है जनाब।
पर कई बार हमें मिलता है, हमारे कर्मों का जवाब ॥

शायद मिल जाता है, हर मर्ज का इलाज।
पर नहीं मिला इस दुनिया में सन्देह का इलाज ॥

दुनिया में सबसे कीमती है, जो रब ने दी है सहाब।
कीमत उससे पूछ जो है, एक-एक श्वास का मोहताज ॥

कोई क्या करे?

उमड़-घुमड़कर आता है, मनभर कर बरसाता है।
पर कोई भीगना ना चाहे, तो बादल क्या करे?

कल-कल कर बहती हैं, जल से सबको भरती हैं
पर कोई न लेना चाहे, तो नदियाँ क्या करें?

सुबह-सुबह वह आता है, ज्योति से भर देता है।
पर कोई बाहर ना निकले, तो सूरज क्या करे?

हरा-भरा वह भाता है, फल देकर मुस्कुराता है।
पर कोई खाना ना चाहे, तो वृक्ष क्या करे?

यहाँ-वहाँ वह आता है, ज्ञान की बात सुनाता है।
पर कोई सुनना ना चाहे, तो साधु क्या करे?

तेरा-मेरा दाता है, करुणा का हाथ बढ़ाता है।
पर कोई जीवन ना चाहे, तो मालिक क्या करे?

गुन-गुन गीत वह गाता है, जीवन-संगीत सुनाता है।
पर कोई कान बन्द रखे, तो भँवरा क्या करे?

इत उत झोले खाता है, तन-मन को छूकर जाता है।
पर कोई स्नेह ना चाहे, तो 'पवन' क्या करे?

गज़ब हो गया

प्यासा पहुँचे कुएँ पर, यह तो होता आया।
आज कुआँ आया प्यास बुझाने, गज़ब हो गया ॥

राही पहुँचे मंज़िल पर, यह तो हमने देखा।
आज मंज़िल ढूँढ़े राही को, गज़ब हो गया॥

नदियाँ भरतीं सागर को, इसमें नई बात नहीं।
आज सागर मिलने नदी को आया, गज़ब हो गया॥

भक्त जाए भगवान के घर, ये तो रोज की बात है।
आज भगवान आया भक्त से मिलने, गज़ब हो गया॥

दर्दी पहुँचे औषध के पास, बहुत अच्छी बात है
आज स्वयं चलकर औषध आई, गज़ब हो गया ॥

गुरु सिखाए चेले को, परम्परा की बात है।
आज चेला दे रहा शिक्षा, गज़ब हो गया ॥

धरती घूमे सूर्य चहुँ ओर ये सनातन बात है।
आज सूर्य पीछे-पीछे घूमे, गज़ब हो गया ॥

भूख लगे तो रोटी खाएँ, ये तो चलता आया।
आज भूख लगी है रोटी को, गज़ब हो गया ॥

जल

आज बचाएँगे जल तो, सुरक्षित हमारा कल है।
पानी के अपव्यय को बचाना मात्र एक ही हल है॥

बूँद-बूँद को तरसोगे, नियम एक अटल है।
यूँ ही बहाते रहे तो, विनाश दुनिया का फल है॥

बूँद-बूँद से घड़ा भरता, नदी, नाले, दरिया हैं।
नीर को रखे संरक्षित, यही हमारा बल है॥

पानी यदि सुरक्षित है तो, हरा-भरा यह थल है।
इससे चहुँ ओर हरियाली है, खुशियों भरा हर पल है॥

यूँ तो होता अमूल्य पर, कीमत लग गई है।
तृप्ति नहीं मिलती, जहाँ ब्रिक्री वाला जल है॥

ये है कुदरत की बख्शीस, क्यों अपना हक जताए।
उचित बँटवारा नहीं हुआ तो, परस्पर युद्ध अटल है॥

गीत गाता है

यहाँ पर हर कोई सफल नहीं हो पाता है।
वैसे जीवन की रुई को तो हर किसी ने काता है ॥

अनाचार की वर्षा हो रही, उसे कौन रोक पाता है।
वही बच पाएगा जिसके पास धर्म का छाता है ॥

कोई देती है जन्म, कोई जीवन की धाता है।
जो देती है पोषण, प्रत्येक हमारी माता है ॥

कोई पद, कोई बल, कोई धन का रोब जताता है।
विरला है जो सफलता पर फूला नहीं समाता है॥

जीवन की राह में, कोई आता है तो कोई जाता है।
पर जो देता है खुशियाँ, वही मन को भाता है॥

कहीं धर्म ने, कहीं जाति ने, कहीं प्रदेश ने बाँटा है।
पर मानव का मानव से सबसे पहला नाता है ॥

बड़ा बनने की होड़ में, आदमी सुख-चैन गँवाता है।
जो खाता सन्तोष की रोटी, आनन्द के गीत गाता है॥

बीज

मैंने बोये थे कुछ बीज,
उसमें से एक बीज
वटवृक्ष बन गया है
दे रहा है छाँव,
फल और फूल
कुछ बीज दबे रह गए
कुछ उगकर कुम्हला गए
कुछ बड़े नहीं हो पाए।

मुझे नहीं कोई आस,
किसी बीज से
बस मैं तो बोता रहूँगा
शुभकामनाओं के
नए-नए बीज।

यहाँ ज़िन्दगी में

किसी को हम चाह रहे, कोई हमें चाह रहा।
अजीब सी कश्मकश है, यहाँ ज़िन्दगी में।

किसी को हम सुना रहे, कोई हमें सुना रहा,
गजब का रिवाज है, यहाँ ज़िन्दगी में।

किसी का हम खा रहे, किसी को खिला रहे,
विचित्र-सा व्यवहार है, यहाँ ज़िन्दगी में।

किसी को फँसा रहे, किसी को बचा रहे,
बेढंगा (रागद्वेष) सा रुख है, यहाँ ज़िन्दगी में।

किसी को दोस्त मानते और किसी को दुश्मन,
विशिष्ट सा ख्याल है, यहाँ ज़िन्दगी में।

कभी किसी से हारते, कभी किसी से जीतते,
एक अलग-सा खेल है, यहाँ ज़िन्दगी में।

किसी को बुला रहे, कोई हमें बुला रहा,
खास-सा अंदाज है, यहाँ ज़िन्दगी में।

किसी को हम पालते, कोई हमें पाल रहा,
उफ् ! क्या भरम है, यहाँ ज़िन्दगी में।

कोई हमसे छोटा है, कोई हमसे बड़ा,
एक न्यारी सोच है, यहाँ ज़िन्दगी में।

किसी को डरा रहे, कोई हमसे डर रहा,
भिन्न-भिन्न प्रकार हैं, यहाँ ज़िन्दगी में।

काया

तुझमें, मुझमें भेद न पाया।
जो मुझमें सो तुझमें पाया॥

जोगी को भी नाच नचावे।
पता नहीं कैसी है माया॥

कहीं बेसुरा, कहीं सुर में।
सबने अपना गीत है गाया॥

क्षण-क्षण इसका क्षरण हो रहा।
क्यों करते हो वक्त को जाया॥

माना कि वो पास नहीं है।
फिर भी है ये उसकी छाया॥

बड़ी मुश्किल से कटी थी घड़ियाँ।
ऐसा वक्त क्यों फिर से आया?

उसने तो सारे रंग बिखेरे।
पर मन को उसके एक ही भाया॥

इस दुनिया में जो भी आया।
कुछ बाते हैं संग में लाया॥

जीवनभर का साथ दिया है।
एक दिन साथ छोड़ेगी काया॥

बन जाऊँ

ज़िन्दगी की दौड़ में, मुकाम बन जाऊँ।
राह में हो तपती धूप, सुहानी शाम बन जाऊ ॥

पहेली है ज़िन्दगी, कौन सुलझा पाया है।
उलझनों के दौर में, सुलझन बन जाऊँ ॥

ज़िन्दगी एक जंग है, अस्तित्व की लड़ाई।
हारती बाजी लगे तो, जीत बन जाऊँ।

कितनी भी आवाज दो, यहाँ सुनने वाला कौन?।
अनसुनी आवाज का फरमान बन जाऊँ ॥

नगर-नगर में डगर-डगर पर संदेहों के घेरे।
संशयों की राह में, विश्वास बन जाऊँ ॥

यूँ तो विधाता के हाथ में है ज़िन्दगी का लेखा।
कम पड़ रही हो तो श्वास बन जाऊँ ॥

मनुज

यूँ तो जो भी सुबह जाता है, शाम को लौट आता है।
ये मनुष्य है पता नहीं कहाँ अटक जाए, भटक जाए?

यूँ तो सब तभी खाते हैं, जब भूख लगती है।
ये मनुज है पता नहीं क्या खाए, कब खाए?

यूँ तो सब वफादार होते हैं, अपनी जाति के प्रति,
ये आदमी है पता नहीं, कब धोखा दे, कब वफा निभाए?

यूँ तो मालिक के बन्दे हैं, सब कुदरत के नजदीक,
ये मानव है कभी कुदरत के पास, कभी दूर जाए।

यूँ तो सब अपने आपको, प्राकृतिक घड़ी से चलाएँ,
ये इन्सान है जो कभी घड़ी से चले, कभी घड़ी को चलाए।

नहीं मिला

कुछ लिखना चाहता हूँ आपकी तारीफ में।
बहुत ढूँढ़ा किताबों में, पर शब्द नहीं मिला।

देना चाहता हूँ आपको असीम सुख,
छान ली सृष्टि पर स्वर्ग नहीं मिला।

भावना है आपको दूँ, सितारों की उम्र,
सागर का मंथन किया पर अमृत नहीं मिला।

बनाना चाहता हूँ मैं आपको धरती का भगवान,
खोजा सारा जहाँ, कोई हनुमान नहीं मिला।

बैठाना चाहता हूँ आपको श्रेष्ठ मकाम पर,
खोजे सारे पर्वत, पर कैलास नहीं मिला।

अमर बनाना चाहता हूँ, गीतों से आपकी महफिल,
मगर सप्तक की साधना पर कोई सुर नहीं मिला।

चल रहा हूँ

जो भी आया राह में मिल रहा हूँ।
ज़िन्दगी के सफर में चल रहा हूँ॥

कहीं मिल गए फूल तो खिल रहा हूँ।
कहीं काँटा की अग्नि में जल रहा हूँ॥

कहीं होती इनायत है, तो फूल रहा हूँ।
कहीं पर ठोकरें खाकर पल रहा हूँ।

सुबह सवेरे हर रोज उग रहा हूँ।
शाम होते होते में ढल रहा हूँ।

जो भी हो रिश्ता उसको निभा रहा हूँ।
कहीं अमृत और कहीं गरल पी रहा हूँ।

कहीं पर लगता सार्थक, कहीं गवाँ रहा हूँ।
कुछ ऐसा भी है जिस पर हाथ मल रहा हूँ।

वक्त

अच्छा वक्त आता है सिर्फ अच्छे वक्त।
बुरा वक्त चला आता है, हर वक्त-बेवक्त।

किसी का अच्छा होता है, उसका हर वक्त,
किसी के लिए बुरा ही, बना रहता है वक्त।

दुनिया में सबसे मँहगी चीज होता है वक्त,
एक बार चला गया, फिर नहीं आता वह वक्त।

पद, प्रतिष्ठा और पैसों की दौड़ में बीतता है वक्त,
फिर पैसों से खरीदना चाहता स्वास्थ्यरूपी वक्त।

इस जहाँ में जिसका करीब आ गया वक्त,
उससे ही पूछिए जनाब कि क्या होता वक्त।

कभी बचपन, कभी जवानी, कभी बुढ़ापा कमबख्त,
कभी हँसता है तो कभी रुलाता है ये वक्त।

यूँ तो दुनिया में मित्र, सगे मिलते हर वक्त,
वही सच्चा स्नेही है, जो काम आए बुरे वक्त।

खुद के लिए जिसके पास नहीं है वक्त,
दुनिया में वह गरीब है, यह कहता है वक्त।

गाफिल हो मत घूमो, बुलावा आएगा किसी वक्त,
जो है जागरूक हर क्षण, उसका धन्य होता वक्त।

कभी बिखरता, कभी निखरता, कभी सँवरता वक्त,
आदमी को हर वक्त बदलता रहता है वक्त।

विकृति

सम्बन्धों तक तो पहुँच गई,
'यूज एण्ड थ्रो' की प्रकृति।
पता नहीं कहाँ तक पहुँचेगी,
हमारी यह विकृति।

नए जीवन-साथी के लिए,
आजकल देखते हैं आकृति।
न ही देखते प्रकृति,
और कैसी भी हो संस्कृति।

स्वार्थ ही आधार है,
आजकल सम्बन्धों का।
भावनाएँ गौण हो गईं,
रहती सम्भावनाओं की स्मृति।

आजकल डिग्रियाँ सिर्फ
पढ़ाई के खर्च की रसीद है।
सही निर्माण वही है
जब आचरण में दिखे सुकृति।

हर व्यक्ति, हर देश चाहता,
वह सुखी हो जाए।
सब एक दूसरे का आधार हैं,
इसकी करते रहते विस्मृति।

बड़े

बड़े हो जाने से ही सभी, बड़े नहीं हो जाते।
बड़े होने के अपने दायित्व को विरले ही निभाते।

धन्य हैं वे लोग जिन्होंने साधुता का मार्ग अपनाया
सुख-दुःख से सम रहने का जिन्होंने दृढ़ संकल्प अपनाया
मान, अपमान, निन्दा, प्रशंसा में, वे भी सम कहाँ रह पाते हैं?
समता की परीक्षाओं में वे भी पास कहाँ हो पाते हैं?

पूज्य हैं वे मनुज जो धर्मप्रमुख का भार निभाते
कथनी और करनी से लोक-दिलों में स्थान हैं पाते
प्रवचन उच्च आदर्शों का, यूँ वे करते रहते हैं
पर्दे के पीछे अधिकतर सामान्य से ही होते हैं।

सम्माननीय हैं वे नेता, जो समाज का नेतृत्व करते
अपनी सुधि नहीं रखते पर जन-जन की हैं सेवा करते,
बातें तो करते देश सेवा की, सबको ख्वाब दिखाते हैं
पर पद-प्रतिष्ठा, पैसा, परिवार और पार्टी में ही हर्षाते हैं।

महान हैं वे उद्योगपति, जो विभिन्न उद्योग चलाते हैं
अनेक लोगों को रोजगारी देते और उनका घर चलाते हैं
वे भी श्रमिकों का शोषण, नफाखोरी और प्रदूषण बढ़ाते हैं।
फिर दान व सेवा के नाम पर अपनी वाह-वाह कराते हैं।

आदरणीय हैं वे डॉक्टर, जो मानव की सेवा करते
अहर्निश लगे रहते और उनके दर्द हैं हरते
कभी-कभी मरीजों को वे भी करते गुमराह हैं
धन से अपना घर भरना ही उनकी चाह है

मेट्रो

कुछ की नजर पोशाक पर तो
किसी की घड़ी पर
कुछ देख रहे थे जूते
तो किसी की नजर थी बालों पर
कोई दृष्टि गड़ाए बैठा था
किसी के गालों पर
किसी की नजर साथ के सामान पर
तो कोई सुन रहा था किसी की बातें
हेयर स्टाइल और ड्रेसअप भी
किसी की आँखों में थी
किसी की मोहक अदा
कुछ की आँखों में थी।

बाकी सब अपने-अपने
मोबाइल में लगे थे
मेट्रो चल रही थी,
इसमें ज़िन्दगी पल रही थी।

आपको क्या?

लोग देखते हैं कि,
वह क्या देकर गया?
मैं देखता हूँ कि,
वह क्या लेकर गया?
यूँ नहीं जाने देंगे,
तुम्हें महफिल से।
सुनाकर जाइएगा,
गीत कोई नया।
हर कोई पेश कर रहा है
अपना अशआर।
पर आपका निराला है,
अंदाजे-बयाँ।
अश्लीता अब,
शिष्टाचार बन गई है।
यहाँ कहाँ बची है,
शर्म और हया।
उसने पूछा नव वर्ष पर
आप देंगे मुझे क्या?
मैंने कहा जीवन दिया,
और दूँ आपको क्या?

महासागर

कोई बुद्ध,
कोई महावीर,
कोई पतंजलि,
कोई गोरख,
कोई शंकराचार्य,
कोई नानक,
कोई पैगम्बर,
कोई जिसस
या कबीररूपी
ज्ञान के ये जो शिखर हैं।
इन पर पुरुषार्थ से चढ़ो,
और मिल जाओ बादलों में।

या फिर इन्हीं पर्वतों से
निकलने वाली
मीरा की, राधा की
भक्तिरूपी, प्रेमरूपी बहती
नदियों के किनारे चलो,
तो भी पहुँच जाओगे,
महासागर तक
और फिर भाप बनकर
मिल जाओ बादलों में।

प्रतिष्ठा

मैंने पाया,
भीतर का आँगन,
भरा पड़ा है
कूड़ा और कर्कट,
राग और द्वेष,
ईर्ष्या और भय से
काम, क्रोध, मद, लोभ से
चित्त भरा पड़ा

भरी पड़ी हैं,
अनन्त कामनाएँ,
कुछ पाने की वासनाएँ,
प्रसिद्धि की लालसाएँ,
अब इनको हटा रहा हूँ
और बना रहा हूँ,
पवित्र, सुन्दर, आनन्दमय
शान्त, सरल इस मन्दिर को,
और उत्सुक हूँ,
परमात्मा के स्वागत के लिए
उसे प्रतिष्ठित करने
मन-मन्दिर में।

संकल्प

वह क्या लेगा मेरे हौसलों की परीक्षा,
उसने हवा बन्द की, मैंने साँस रोक दी।

अब दी है मुझे उसने अकालों की सजा,
उसने पानी रोका, मैंने प्यास रोक दी।

वह डराना चाह रहा है, घने अँधेरों से,
उसने उजाले रोके, मैंने दृष्टि रोक दी।

कितना बनाएगा मोहताज, एक-एक दाने को,
उसने अन्न रोका, मैंने भूख रोक दी।

झुकाना चाह रहा करके मौन और अकेला,
उसने वाणी रोकी, मैंने आवाज रोक दी।

अब वह करने चला है, बुद्धि को भ्रष्ट,
उसने मति रोकी, मैंने सोच रोक दी।

अब आजमाया है उसने अन्तिम शस्त्र,
उसने राह रोकी, मैंने चाह रोक दी।

बात

बताना भी एक कला है, कैसे बताएँ बात।
कुछ लोग बता देते हैं, बात-बात में बात।

कुछ बहुत बोलकर भी नहीं कह पाते बात,
कोई इशारों-इशारों में ही कह देते हैं बात।

सिर्फ बोलना ही नहीं होती है बड़ी बात,
वैसे तो मौन ही होती है सबसे बड़ी बात।

कोई बहुत बोले पर समझ नहीं आती बात,
किसी-किसी की तुरन्त गले उतरती है बात।

भाषण, उपदेश, कोमेन्ट्री ये है लोगों से बात,
जो प्रार्थना होती है वह है परमात्मा से बात।

सिर्फ जुबान वाले ही नहीं करते हैं बात,
जानवर और पेड़-पौधे भी कहते हैं अपनी बात।

जोर से कहने पर भी किसी की नहीं सुनी जाती बात,
किसी-किसी की खबर बन जाती है छोटी-सी बात।

लड़ाई जब होती है तब होती है कोई बात,
हर पक्ष यही कहता है, सच्ची है मेरी बात।

मान या न मान, जीवन निर्माण की है बात,
गीता और कुरान भी हैं किसी की कही बात।

चाहे जितनी फैल जाए, जग में झूठी बात,
पर हम सबका आधार है जहाँ में सच्ची बात।

टी.वी., नेट, अखबारों में दिखती हजारों बात,
पर उसमें काम की होती है कोई-कोई बात।

सवाल के रूप में जब पूछी जाती है कोई बात,
जरूरी नहीं, उसका जवाब हो कोई बात ॥

दुकान

मैंने खोली है बाजार में एक छोटी-सी दुकान।
जिसमें मिलता है प्रेम, शान्ति व आनन्द का सामान ॥

हर चीज निःशुल्क है मान लो या सम्मान।
मिलेगी यहाँ प्रामाणिकता जो पूरा करेगी सब अरमान ॥
सबसे मैत्री मिलेगी और अभय का वरदान।
और मिलेगा आपको प्रफुल्लिता का मकाम ॥

लज्जा, शर्म, मर्यादा, नीति उपलब्ध है यहाँ।
अनुशासन, संयम और त्याग उपलब्ध है यहाँ ॥
दूसरों की भावना की समझ उपलब्ध है यहाँ।
पवित्रता की पावन धारा उपलब्ध है यहाँ ॥

क्षमा, निर्लोभता, सरलता जो चाहे ले जाए।
कोमलता, लघुता, श्रमशीलता जो चाहे ले जाए ॥
विवेक, धैर्य, सहिष्णुता जो चाहे ले जाए।
मुस्कान और निर्दोषता जो चाहे ले जाए ॥

आहार का संयम मिलेगा यहाँ।
विहार का संयम मिलेगा यहाँ।
निहार का संयम मिलेगा यहाँ।
व्यवहार का संयम मिलेगा यहाँ।

मधुर वाणी, शिष्टता, सफल करे हर काम।
पुरुषार्थ, साहस, दूरदृष्टि कभी होने न दे नाकाम ॥
प्रमुदिता, तटस्थता और भक्ति है निष्काम।
जीवन में करुणा करे सब राह आसान ॥

यहाँ मिलेगी शक्ति और निष्काम कर्म।
यहाँ मिलेगी कृतज्ञता और जीवन का मर्म ॥
यहाँ मिलेगी अहिंसा जो है जीवन का धर्म।
यहाँ मिलेगी ईमानदारी जो कभी न लाए शर्म ॥

चुप रहना जीवन है

बोल-बोलकर क्या बोलेगा,
साथी चुप रहना जीवन है।

कहीं बोल झूठ बन जाए,
किसी को बोली नहीं सुहाए।
रहो सींचते मौन को हरदम,
यह सुन्दर भावों का वन है।
साथी चुप रहना जीवन है।

कहीं वचन रागासिक्त है,
कहीं भरे ये द्वेष भाव से।
राग-द्वेष भरे शब्दों से,
क्यों तू दूषित करता मन है।
साथी चुप रहना जीवन है।

कहीं क्रोध से भरे शब्द हैं,
कहीं पे झलके मान और माया।
स्वार्थ भरे इन शब्दों से,
क्यों दूषित करता है काया ॥
साथी चुप रहना जीवन है।

मीठी वाणी से काम निकाले,
स्वार्थपूर्ति पर वचन न पाले।

छल-कपटपूर्ण बातों से तो,
बेहतर है वाणी पर ताले।
साथी चुप रहना जीवन है।

कहीं पर वाणी जख़्म है करती,
किसी समय ये बहुत अखरती।
असत्य और अशिष्ट वाणी से,
जीवन की है राह बिखरती।
साथी चुप रहना जीवन है।

मौन गुरु का बहुत है कहता,
मौन से ही सत्य है रहता।
बड़ा वही जो मौन से सहता,
मौन से नहीं घर है ढहता।
साथी चुप रहना जीवन है।

मौन है प्रभु का आधार,
मौन है देश का आधार।
मौन है घर का आधार,
मौन है भक्ति का आधार।
साथी चुप रहना जीवन है।

सन्देश

कुछ नजरों कों क्यों हिन्दू या मुसलमान दिखता है।
मुझे तो हर व्यक्ति पहले इन्सान दिखता है।

चाहे दीपावली के दीप जलें, चाहे हो ईद की खुशियाँ,
मुझे तो हर बात में वह मेहरबान लगता है।

अच्छे इन्सान बनो और बुराइयों से दूर रहो,
यही तो हर धर्म ग्रंथ अपने सन्देश में कहता है।

चाहे जितना मन्दिर जाए, चाहे नमाज की पाबन्दी,
वही सबको प्यारा लगता जो ईमानदार होता है।

कोई उसको लहू कहे, या कोई कहता रक्त,
रंग तो एक-सा लाल है वही सबमें बहता है।

कोई गरीब कोई अमीर और ऊँच-नीच का भाव रखे,
हर इन्सान की कद्र करो, वही मालिक सबमें रहता है।

जीवन की राह में यदि आ जाए कभी संकट की घड़ी,
जो होता है आसपास, वही प्रथम मदद में रहता है।

सबकी अपनी-अपनी श्रद्धा, अपनी-अपनी रीत है,
नदियाँ कहीं भी बहें, पर मिलन सागर से होता है।

क्या हुआ?

बसन्त तुम्हारे स्वागत को तैयार है,
चल रहा है पतझड़ तो क्या हुआ?

इसके बाद अब सुखों की सौगात है,
झेल रहे हो थोड़ा दुःख तो क्या हुआ?

अवश्य होगा मिलन जिसको तुम चाह रहे,
कर रहे हो थोड़ा इन्तजार तो क्या हुआ?

मंज़िल भी तो पास आती जा रही,
थोड़ा लम्बा रास्ता है तो क्या हुआ?

कामयाबी तो निश्चित है गर तूने ठाना है,
हो रहा कुछ नाकाम तो क्या हुआ?

फिर उगेगा जीवन में वही सुनहरा सूरज,
रात लम्बी हो गई तो क्या हुआ?

दे दे माफी ले ले माफी, संवाद शुरू होगा,
कहीं हुआ है मनमुटाव तो क्या हुआ?

समाधान तो अवश्य मिलेगा इसका,
समस्या कोई आ गई तो क्या हुआ?

ताश का खेल

जीवन एक ताश का खेल।
कहीं भाग्य का लेखा, कहीं पुरुषार्थ का खेल।

सबको अपने-अपने पत्ते मिलते।
कहीं उदासी, कहीं पे चहेरे खिलते।
सब अपनी-अपनी कोशिश करते।
कोई हो जाता पास, तो कोई होता फेल।
जीवन एक ताश का खेल।

कुछ पत्ते प्रभाव दिखाते।
फिर वे दुबारा काम न आते।
बचे हुए ही अपने कहलाते।
यूँ ही चलती जीवन की रेल।
जीवन एक ताश का खेल।

जोखिम लेता सफल भी होता।
मिले पत्तों से विफल भी होता।
कहीं जोकर, कहीं युक्ति का योग भी होता।
कहीं समझदारी से खेले कहीं पे फेलम फेल।
जीवन एक ताश का खेल।

स्नेही, सम्बन्धी सब पत्ते हैं
स्थिति परिस्थिति सब पत्ते हैं।
बचपन-यौवन सब पत्ते हैं
कहीं लगे नन्दनवन, कहीं लगे ये जेल।
जीवन एक ताश का खेल।

कैसे पत्ते दिए प्रभु ने।
तू भी एक पत्ता है प्रभु का।
यह सारा है खेल प्रभु का।
इसको अच्छे से खेल।
जीवन एक ताश का खेल।

कैसे खेला वह है खिलाड़ी।
कितना खेला वह है खिलाड़ी।
लिया हो आनन्द वह है खिलाड़ी।
हँस ले चाहे रो ले.. यह जीवन का खेल।
जीवन एक ताश का खेल।

हर कोई

बटोरते तो सब हैं, बाँटता है कोई-कोई।
यूँ ही चलता है, इस दुनिया में हर कोई॥

सोते तो सब हैं, जागता है कोई-कोई।
यूँ ही जीता है, इस दुनिया में हर कोई ॥

बोलते तो सब हैं, आचरण करता कोई-कोई।
यूँ ही बसता है, इस दुनिया में हर कोई।

खाते तो सब हैं, पर खिलाता कोई-कोई।
यूँ ही रहते हैं, इस दुनिया में हर कोई।

चाहते तो सब हैं, पर कद्र करता कोई-कोई।
यूँ ही रिवाज निभाता है, इस दुनिया में हर कोई ॥

रूठते सब हैं, पर मनाता कोई-कोई।
यूँ ही सम्बन्ध निभाता है, इस दुनिया में हर कोई ॥

दौड़ते तो सब हैं, पर पहुँचता कोई-कोई।
यूँ ही तकदीर अजमाता है, इस दुनिया में हर कोई ॥

बोलते तो सब हैं, मौन रहता कोई-कोई।
यूँ ही अपनी बात कहता, इस दुनिया में हर कोई ॥

काम करें भैया?

नहीं मानते बच्चे, अब का करें भैया?
रोका-टोकी बहुत करो तो, करते ताता-थैया ॥

पूरे दिन बैठे रहते हैं, लेकर ये मोबाइल।
अब लगता है नेट ही इनका हो गया खेवैया ॥

जब देखो तब होटल जाते, खाने को यह खाना।
बहुत समझाते हैं पर घर नहीं रुकते इनके पैयाँ ॥

नई-नई फिल्में जो आएँ, सबसे पहले भागें।
कभी इनको आँख दिखाओ, कहते मत रोको भैया ॥

आज यहाँ कल वहाँ, इनके दोस्तों की पार्टी।
रोकते इनको बहुत, पर ये कहते हम तो जैइयाँ ॥

जब नया विज्ञापन आए, करनी इनको शांपिंग।
बहुत मनाने पर ये कहते, बहुत दिन से नहीं गईयाँ ॥

कहे काम जो कोई घर का, टालमटोल हैं करते।
नहीं परवाह इनको, ये दिखा देते है ठइयाँ।

रिश्तेदारी प्रसंग प्रवचन में, जाना नहीं ये चाहते।
कहते इतने बिजी हैं काम में, हम वहाँ क्या करैयाँ ॥

पलता है

अब पता चला यह गुलशन क्यों खिलता है,
सुबह-सुबह सबसे पहले ये आपसे मिलता है।

पता है खिला हुआ, खाक में मिलता है।
इसलिए गुल यहाँ हर कली से जलता है ॥

शानौ-शौकत का दम भरता, कभी जवानी में मचलता।
सुबह उगनेवाला सूरज भी शाम को ढलता है ॥

समय का काम जो समय पर नहीं करता है।
समय बीत जाने पर सिर्फ हाथ को मलता है॥

लाख करो तुम साजिशें, उसका क्या बिगड़ता है।
जिस पर प्रभु का हाथ, वह हर बला से टलता है॥

मनुष्य मनुष्य से जानवर-सा व्यवहार करता है।
यह विचार हमेशा मेरे दिल में खलता है॥

शोषण, कालाबजारी, धोखाधड़ी से जो अपना घर भरता है।
कितना ही खुश हो जाए, अपने आपको छलता है॥

अच्छा करने वालों को अच्छा ही मिलता है।
बोया बीज नेकी का तो एक दिन जरूर फलता है॥

वही जन्म देने वाला, वही कल्याणकर्ता है।
निमित्त चाहे कोई भी हो, हर जीव विधाता से पलता है॥

बसेरा

घर तो अपने लिए बनाया, बसे यहाँ कोई और।
ये भी घर के सदस्य हैं जो करते रहते शोर ॥

मुंडेर पर पक्षी रहते, गिलहरी रहती एक छोर।
कीड़ी-मकोड़े, कीट पंतगे, किसी का पेड़ों पर ठौर ॥

कुत्ता-बिल्ली गली में रहते, आते खाना खाने।
हाथी, ऊँट, गाय, बैल और आते कई ढोर ॥

छिपकलियाँ दिवारों पर रहतीं, कहीं चूहों का जोर।
जगह-जगह ये दीमक रहती, जो है लकड़ी खोर ॥

गटरों में तिलचट्टे रहते, कानखजूरे हर पोर।
मकड़ी बनाती जाले, रहता मच्छर-मक्खी का दौर॥

तितलियाँ, मधुमक्खी, भँवरे आते, कभी तो करो गौर।
रंग-बिरंगे पक्षी आते, तोते, चिडियाँ और मोर ॥

बन्दर कूदाकूद हैं करते, संध्या हो या भोर।
बहुत खुश होते हैं जब उनको मिले रोटी का कौर।

सब घर के सदस्य हैं, चलाएँ अपना जोर।
कोई करें रखवाली, कोई हैं काम चोर ॥

मेरा नगर

दहशत और लाचारी हर डगर है।
आज क्यों सहमा सा मेरा नगर है?
कल तक जो जागता था रात-दिन।
आज क्यों वीरान-सा मेरा नगर है?
मेलजोल, परस्परिता और सामाजिकता दूर हुई।
आज घर में कैद क्यों मेरा नगर है?
कुछ परिन्दे मेरे पास आकर के बोले।
आज क्यों शान्त-सा मेरा नगर है?
राजनीति और धर्म की सभी चर्चाएँ बन्द हैं।
आज क्यों चुपचाप सा मेरा नगर है?
एक ऐसा दुश्मन है जो आँखों से दिखता नहीं।
फिर भी उससे लड़ रहा मेरा नगर है।
यह लड़ाई सैनिक नहीं, डॉक्टर लड़ रहे हैं।
सफेद वर्दी को सलाम कर रहा मेरा नगर है।
छोटों से बड़ों तक ज़िन्दगी में पहली बार।
'लॉकडाउन' का अनुभव कर रहा मेरा नगर है ॥
बाग-बगीचे, बाजार, कचहरियों में घूमता,
आज घर में थम सा गया मेरा नगर है।
नफाखोरी, कालाबाजारी, कहीं मानवता के काम,
हर बात का साक्षी बन रहा, मेरा नगर है।
चाहे कैसी विपदा आए, इस जमीं पर,
पुनः स्वस्थ हो रहा मेरा नगर है।

कोरोना महामारी एवं लॉकडाउन के सन्दर्भ में (अप्रैल, २०२०)

कविता को

आज गुलाब आ गया मेरी लाइनों में,
और महका रहा है कविता को।

आज नदियाँ बन आई हैं स्याही-सी,
और प्रवाहित कर रहीं कविता को।

आज चाँद छा गया मेरे पन्नों पर,
और शुभ्र कर रहा है कविता को।

आज सूरज खिल गया कलम में,
और कर रहा है प्रकाशित कविता को।

आज पवन छू रहा है ख्यालों को,
और आनन्दित कर रहा है कविता को।

आज पर्वत आ गया है शब्दों में,
और ऊँचाई दे रहा है कविता को।

आज सावन बरस रहा है बुद्धि पर,
और सिंचन कर रहा है कविता को।

आज सागर आ गया है मेरी कल्पनाओं में
और गहराई दे रहा है कविता को।

आपने तो

जरूरत थी एक लोटे की, प्यास बुझाने के लिए,
आपने तो पूरा सरोवर ही भेज दिया।

आवश्यकता थी थोड़े अन्न की, भूख मिटाने के लिए,
आपने तो जहाँ भर के खेतों का ईनाम दे दिया।

चाहत थी जीवन में बस थोड़ी मन्द चाँदनी की,
आपने तो पूरा चाँद ही भेंट दे दिया।

ख्वाहिश थी उष्मा की, थोड़ी तपिश के लिए,
आपने तो पूरा सूरज मेरे नाम कर दिया।

सोचा कि एक गीत बनाऊँ, गुनगुनाने के लिए,
आपने तो सातों सुरों को फरमान दे दिया।

कल्पना थी कुछ रंगों की एक चित्र के लिए,
आपने तो पूरा इन्द्रधनुष नज़र कर दिया।

संकल्प किया कि फिर से तरोताजा हो जाऊँ,
आपने तो पूरा बसन्त भेज दिया।

जिज्ञासा थी कि कोई शब्द मिल जाए,
आपने तो पूरा शब्दकोश उपहार दे दिया।

मायाजाल

चारों ओर चकाचौंध है, सर्वत्र माया का जाल।
धर्म पर भी धन का राज, बढ़ा रहा जी का जंजाल।

यहाँ-वहाँ समाज टूट रहा, टूट रहा परिवार,
अब व्यक्ति भी टूट रहा, प्रभो ! उसको तो तार।

वायु, पानी, रोशनी का बढ़ रहा प्रदूषण,
भूमि दूषित हो रही, कहीं शोर का दूषण।

बढ़ रहे इस दुनिया में, मनोरंजन के साधन,
होटल, बोतल, थियेटर, फैशन और सौन्दर्य प्रसाधन।

घर के बाहर बोर्ड लगाया, अन्दर आना मना है,
पर इंटरनेट मोबाइल, टी.वी. गजेट पर सब फना हैं।

मन्दिर, मस्जिद, गिरिजाघरों में, व्यक्ति धर्म खूब दिखाता,
पर एक दूजे संग व्यवहार में उसको है भूल जाता।

यूँ तो ऋषि-मुनि जन-नायक होते, राह दिखानेवाले,
पर आजकल आदर्श बन गए, मनोरंजन करनेवाले।

कोई चल रहा गलत राह तो उसको तो समझाए,
पर कुएँ में ही भाँग पड़ गई, किसको कौन बचाए?

देव और दानव बसते, दोनों मनुज के भीतर,
देव बिचारे सो रहे, जगे दानव अधिकतर।

माया ने जाल डालकर, हर किसी को फँसाया,
सबकी मति भ्रष्ट हो गई, विरला ही बच पाया।

सिखाता है

वह आता है, चला जाता है।
यह सूर्य हमें कुछ बताता है।

कभी ज्वार कभी भाटा आता है।
यह समुद्र हमें कुछ बतलाता है।

सर्दी-गर्मी फिर पानी बरसाता है।
यह खेल हमें कुछ जताता है।

वह बरसता है और बह जाता है।
यह जल हमें कुछ कह जाता है।

कभी सुख आता है, कभी दुःख आता है।
यह चक्र हमें कुछ कह जताता है।

बचपन, जवानी फिर बुढ़ापा आता है।
यह जीवन सबसे क्यों मिलाता है।

हर किसी को नहीं मनुज जन्म मिल पाता है।
सार्थक कर लो जीवन, शायद यही सिखलाता है।

अलग बात है

हम छोड़ते नहीं, छूट जाए अलग बात है।
कुछ लोग झुकते नहीं, टूट जाएँ अलग बात है।

कुर्सियों की दौड़ से थकते नहीं कुछ नेता,
लोग ही हरा देते हैं, यह अलग बात है।

झूठी शानो-शौकत में जीते हैं, कुछ महानुभाव,
कंगाली ही आ जाए, यह अलग बात है।

बुरी आदतों के गुलाम हैं, यहाँ कई लोग,
बीमारी ही छुड़वा देवे, यह अलग बात है।

बात-बात में बनावट करने में माहिर हैं कुछ लोग,
बाद में शर्मिन्दा हों, यह अलग बात है।

कुछ यहाँ पर ऐसे हैं, जो देते सिद्धान्तों की दुहाई,
खुद पर लागू नहीं करते, यह अलग बात है।

मेरा मार्ग ही श्रेष्ठ है, कुछ कट्टरवादी सोच,
मार्ग ही बन्द हो जाए, यह अलग बात है।

बचाते हैं

पीने को तो कुछ यूँ जहर भी पी जाते हैं।
धन्य हैं वे लोग जो, श्रद्धा को पचाते हैं।

वह जो सर्वव्यापक है और सबका रखवाला,
उसे रिझाने को बन्दे क्या-क्या खेल रचाते हैं।

ढो रहा है मानव, ऊँचे आदर्शों का बोझ,
इसलिए लोग होते हैं कुछ और कुछ दिखाते हैं।

करते रहो हर किसी का दिल से अच्छा,
शायद बुरे कर्म में यही सत्कर्म हमें बचाते हैं।

गर्जनाएँ करते रहते, पर बरसते नहीं,
कई बार ये बादल भी, झूठा शोर मचाते हैं।

आज गया सो गया, कल तो अच्छा आएगा,
कुछ लोग यूँ ही अपने दिल को समझाते हैं।

लाख जाए तो जाए, शाख नहीं गिरने देते,
जो होते हैं पक्के वो यूँ ही रंग जमाते हैं।

मनुज, जानवर, पंखी, कहीं ठौर नहीं पाते हैं,
सुबह निकलते घर से, शाम को घर आते हैं।

बटोरते सब रहते हैं, पर परोपकार कर जाते हैं,
वही इस दुनिया से, कुछ कमाकर जाते हैं।

प्रतिनिधि

मैं छोटा-सा हूँ
पर अग्रदूत हूँ
आपके विचारों का
प्रतिनिधि हूँ
कलम कहो
या पेन चाहे बॉलपेन
जेल या मार्कर पेन
समय के साथ मेरे
नए-नए रूप आते रहते हैं

कभी टाइपराइटर, कभी संकेतलिपि
या कम्प्यूटर का की-बोर्ड,
या डिजिटल लेखन,
मैं तो सिर्फ, प्रतिनिधि हूँ
आपके भावों का,
विचारों का।
उन भावों को,
आप जो शब्द देते हैं
मैं उसे लिख देता हूँ।

कहीं अनुस्वार,
कहीं अल्पविराम,
तो कभी पूर्ण विराम,
मैं तो करता हूँ,
निराकार को

साकार।
देता हूँ सत्य को आकार।

भाव तो असीम हैं,
पर इस दुनिया में,
मैं देता हूँ उसे थोड़ा सहारा।
और हाँ मुझसे कुछ भी लिखो,
लेख, कविता, कहानी, उपन्यास,
चाहे पत्र-पत्रिकाएँ छपवाओ
दस्तावेज या प्रोमिसरी नोट,
चित्र या शिलालेख,
शब्द चित्र, संकेत या कोई लिपि।

और हाँ
ये तूलिका हो या पेंटिंग ब्रश
मशीन हो या इशारेबाजी,
और अब तो मैं
डिजिटल हो गया हूँ।
युग कोई भी हो,
तरीका कोई भी हो,
आपके भावों के विचारों के,
जो शब्द लिखोगे
प्रदर्शित करोगे,
तो प्रतिनिधि मैं ही रहूँगा,
आपकी प्रस्तुति में,
मैं ही कुछ कहूँगा।

होड़

कुछ बनने की चाह में, लगी हुई है होड़,
परिवर्तन हो रहा, और चल रही है दौड़।

बूँद कहे सागर बनूँ, बीज कहे मैं वृक्ष,
नींव कहे प्रासाद बनकर, हो जाऊँ मैं दक्ष।

शब्द कहे पुस्तक बनूँ, वामन कहे विराट,
रज कहे सोना बनकर, चढ़ूँ सिर सम्राट।

पत्थर कहे पर्वत बनूँ, पेड़ कहे मैं जंगल,
फूल कहे मैं गुलशन बनकर, करूँ सभी का मंगल।

पगडण्डी कहे सड़क बनूँ, शिष्य कहे मैं गुरू।
ज्योति कहे सूर्य बनकर, सब अन्धकार हरूँ।

भक्ति कहे मैं शक्ति बनूँ, भक्त कहे भगवान।
कंकर कहे शंकर बनकर, मैं बढ़ाऊँ सबका मान।

वामन से विराट में, करना है यदि गमन,
छोड़ो अपना मूल रूप, करो स्वयं का दमन।

कोरोना एक सन्देश

कोरोना प्रकोप नहीं, यह प्रकृति का सन्देश है।
अभी भी सँभल जाओ, यह उसका आदेश है।

क्षण में बदलती है दुनिया ये हमने जाना।
सक्ष्म स्थूल से शक्तिशाली है ये सबने माना।
इस महामारी से बचा लो, गाया ये सबने गाना।
हर तरफ देखी लाचारी, ये जग सारा छाना।

पंचमहाभूत का प्रदूषण बढ़ा रहा है आदमी।
प्रकृति का हर तरह से हनन कर रहा है आदमी।
भोगवाद की चरम सीमाओं को छू रहा है आदमी।
खुद के स्वाद के लिए जीवों को काट रहा है आदमी।

धर्म स्थान नहीं गए तो क्या तेरा घट गया?
होटल, मोल नहीं गए तो क्या तेरा घट गया?
मित्र, प्यारे से नहीं मिले तो क्या तेरा घट गया?
बाहर (पर्यटन) घूमने नहीं गए तो क्या तेरा घट गया?

ज्योतिष, नेता, धर्मगुरु, पुजारी सब घर के अन्दर हैं।
अमीर, गरीब, बुजुर्ग, जवाँ सब घर के अन्दर हैं।
अभिनेता, खिलाड़ी, छोटे-बड़े सब घर के अन्दर हैं।
शानो-शौकत में भी जीने वाले सब घर के अन्दर हैं।

इस युद्ध को लड़ रही, सफेद वर्दी को सलाम।
महामारी से बचा रही, खाकी वर्दी को सलाम।
साफ-सफाई का रखे ध्यान, स्वच्छता प्रहरी को सलाम।
मानवता के प्रहरी, सेवाभावियों को सलाम।

संतान बनकर आए हो, संतान बनकर फिरो।
प्रकृति के मास्टर बनने की कोशिश मत करो।
करुणा, सुमति, परोपकार अपने दिल में भरो।
पाप करने से पहले मालिक से डरो।

संयम, सीमितता, स्वावलंबन का दे संदेश।
'परस्परोपग्रहोजीवानाम्' का मुखरित है संदेश।
सुख बाहर नहीं भीतर है यह देता संदेश।
घर-परिवार ही श्रेष्ठ है यह दे रहा संदेश।

जीवन

जानेवाला चला जाता है, पीछे वाला ठगा सा रह जाता है।
पर जिससे है संयोग, उससे वियोग का ही नाता है।

दुःख वह अतिथि है, जो बिन बुलाए चला आता है,
सुख तो मेहमान-सा है, जो कहीं नहीं टिक पाता है।

नहीं मिलता वह यहाँ पर, जो मन को अच्छा लगता है,
पर जो जीवन में मिलता है उससे जरूर कोई नाता है।

नए पहने वस्त्र से ज्यों एक दिन का नाता है,
आत्मा को भी यह शरीर एक जन्म के लिए भाता है।

उम्र का पंछी हर रोज, चुग्गा चुगकर उड़ जाता है,
जो करे समय का सदुपयोग, वही कुछ कर पाता है।

सूख जाता जो पत्ता, वह शाख से गिर जाता है,
झड़े हुए पत्तों पर तरु, नहीं शोक मनाता है।

छोटा-सा जीवन है, चहुँ ओर माया की वर्षा है,
बचा लो खुद को इससे, इसलिए तो धर्म का छाता है।

जीवन एक खेल है, हार-जीत का महत्त्व नहीं,
जो खेले खेलदिली से, बस वही मुस्कुराता है।

धन की गति

पास में जो धन आता है
वह कैसे है जाता?
कहीं होता सदुपयोग
तो कहीं व्यर्थ है जाता।

दान कहाए पहली
तो भोग है दूजी गति।
दोनों गति यदि नहीं
तो नाश है तीजी गति।

श्रेष्ठ गति है धन की
परोपकार में योग।
समाज से लिया है
उसी के लिए उपयोग।

कहीं बनाते हॉस्पिटल
कहीं पर धर्मस्थान।
कहीं बनाते सड़क या द्वार
कहीं पर शिक्षास्थान।

कोई बनाए जल का स्थान
कोई वृद्धाश्रम, धर्मशाला।
कोई भण्डारों में राजी
कोई बनाए पशु-शाला।

कोई देवे शोधकार्य में
कोई करे धन सहयोग।

कोई सरकार को देना चाहे
किसी का खेलकूद में योग।

परोपकार के बदले में
देते अपना नाम।
श्रेष्ठ लोग वे होते हैं
जो करते काम अनाम।

धन्य हैं वे लोग
जो संग्रह से देते
पर वे होते हैं महान
जो जीवन से देते।

दूजी गति है धन की
स्वयं के लिए उपयोग।
परिवार का पालन हो
संग मौज-शौक का योग।

अपनी-अपनी भावना
अपनी-अपनी मति।
दान-भोग और नाश
तीन ही धन की गति।

वैसे तो कंजूस देता है
सबसे बड़ा दान।
जाने के बाद ही
आता उसका पैसा काम।

देश की शान

आओ, देश की शान बढ़ाएँ।
बच्चो, मिलकर मिशन बनाएँ।

घर-घर पीने का पानी हो, हर बच्चा शिक्षित, ज्ञानी हो।
हरे भरे वृक्ष लगाकर, पर्यावरण को शुद्ध बनाएँ।

सर्वत्र अहिंसा व शान्ति हो, चेहरे पर आरोग्य कान्ति हो।
हम आपस का भेद मिटाकर, भाईचारा व प्रेम बढ़ाएँ।

नई खोज व नई दिशाएँ, विज्ञान को हर क्षेत्र में लाएँ।
ऋषि-मुनियों की भूमि की, फिर से गौरव-गाथा गाएँ।

खेलकूद में हों हम आगे, दुश्मन हमको देख के भागे।
श्रेष्ठ सोचें और श्रेष्ठ करें, ऐसी सबमें शक्ति जगाएँ।

डिजिटल क्रान्ति को अपनाकर, प्रगति का कदम बढ़ाएँ।
पर बुजुर्गों का मान करें, और संस्कृति की लौ जगाएँ।

चिन्ता और तनाव दूर हो, भय और अन्याय दूर हो।
अन्धश्रद्धा का निर्मूलन कर, भ्रष्टाचार को दूर भगाएँ।

प्रेममय हो जीवन सबका, आनन्दमय हो पथ सबका।
योगमय जीवन बनाकर, देश को शिखरों चढ़ाए।

विसर्जन

कोई हाथ से
कोई सायकल पर
कहीं स्कूटर पर तो कहीं गाड़ी में
जुलूस और बैण्ड बाजों संग
कहीं डी. जे. और नाच-गान का रंग
कहीं दूर में छोटी-बड़ी
मूर्ति को लिए सब जा रहे हैं
विसर्जन करने को
किसी के भीतर पद की
किसी के प्रतिष्ठा की, रूप की, धन की
जाति की, बल की, किसी के ज्ञान की
विराजमान हैं मूर्तियाँ
और-
काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह
ईर्ष्या, घृणा, द्वेष, तनाव और चिन्ताएँ
का दैत्य जो बैठा है सबके भीतर
आज उन सबका भी
मूर्ति संग करें विसर्जन
बहुत किया संसाररूपी सर्जन
अब करें परमात्मारूपी विसर्जन
सर्जन है संसार का रास्ता
विसर्जन है परम से वास्ता।

चला गया

कोई चला गया।
कोई छोड़ गया।
कोई सुखी हो गया।
कोई दुःखी कर गया।
किसी की क्षतिपूर्ति मुश्किल।
किसी का निधन हो गया।
किसी का दुःखद अवसान।
कोई जाकर भी नहीं गया।
कोई होकर भी चला गया।
कोई सिंहासन चढ़ा।
कोई जंजीरों में गढ़ा।
कोई बैकुण्ठी में मढ़ा।
कोई शहीद हो गया।
कोई फना हो गया।
कोई ऋणी कर गया।
कोई ऋण दे गया।
कोई तृप्त कर गया।
कोई सुशोभित कर गया
कोई जीवन जी गया।
कोई राह बता गया।
कोई धन्य कर गया।
यूँ तो हर कोई अपना।
जीवन जी गया।
इस जहाँ में जो भी आया।
यहाँ से चला गया।

जीवन सारा है

मीठा जल देता है, वह बादल लगता प्यारा है।
संग्रह करता रहता वह सागर कितना खारा है।

उतार-चढ़ाव और हार-जीत चलती ही रहती है,
पर जिसने हार मान ली, वहीं इन्सान हारा है।

यूँ तो हर व्यक्ति झेले वक्त का सितम है,
पर उससे अधिक, अपने स्वभाव का मारा है।

तुझको भी तारेगा जिसने सबको तारा है,
दृढ़ विश्वास रख अब की तेरा बारा है।

देना है कुछ संस्कार तो बचपन में ही दे दे,
अभी कुछ नहीं बिगड़ा अभी तो मिट्टी-गारा है।

कल तक जो साथ थे, अब पहचानते नहीं.
पद प्रतिष्ठा क्या मिली, आसमान में पारा है।

सिर्फ श्रमिक ही नहीं, सभी बोझ ढो रहे,
हर एक के माथे पर यहाँ कर्मों का भारा है।

इस जहाँ में हर दर्द हर बीमारी का इलाज है,
पर दवा ही दर्द बन जाए, उसका नहीं चारा है।

यूँ ही नहीं रहता, मेरे देश का मस्तक ऊचाँ,
कुछ लोग लगा देते अपना जीवन सारा है।

तुम यूँ ही याद आते हो

अब तुम यूँ ही याद आते हो,
और संग संग मुस्कुराते हो।
कभी फूलों की महक,
तो कभी पक्षी की चहक,
बन आते हो।

जब सुबह होती है तो
सूर्य की किरण और,
शाम ढले चाँद सितारे,
बन जाते हो।

जब कभी गाते हैं गीत.
तो तुम गुनगुनाते हो,
कभी साथ चलते हो,
कभी बतियाते हो।

कभी-कभी बादल बन,
बरस जाते हो।
कभी शीतल पवन,
बन बह जाते हो।

आँखों से ओझल हुए,
पर दिल से नहीं जाते हो।
तुम यूँ ही याद आते हो,
और संग-संग मुस्कुराते हो...।

ख्वाहिशों का भार

मैं ही लेकर चल रहा हूँ, ख्वाहिशों का भार,
इसलिए जीवन में मेरी हो रही है हार।

अटक गया हूँ, भटक गया हूँ, नहीं आना बार-बार,
अब इस संसार से प्रभु ! तू ही मुझे तार।

जो तुमको पानी है मंज़िल, चलते रहना लगातार।
चट्टानों से क्या डरना, जीवन है नदिया की धार।

समय अपना काम करे, क्यों इतने निश्चिन्त सरकार।
मानो या ना मानो, हर रोज पड़ती है उम्र की मार।

चहुँ दिशाओं से आते, नहीं समाचारों का पार,
सभी काम के नहीं होते, निकालो इसमें से सार।

सब बिकाऊ हो गया है, हो जा अब तू खबरदार।
आजकल तो धर्म और सम्बन्धों का भी लगता बाजार।

देनेवाला नेक है, नहीं अन्याय है यार।
दूसरों को देखकर, मत टपका तू लार।

गिलहरी (खिसकोली)

कभी पेड़ पर, कभी जमीं पर।
इधर-उधर दौड़े खिसकोली ॥
सुबह को आए, शाम को जाए।
दिनभर साथ रहे खिसकोली ॥

कुतर-कुतर कर दाना खाती।
फिर पानी पीये खिसकोली ॥
दौड़-पकड़ ये बहुत खेलती।
यूँ जीवन जीये खिलकोली ॥

इकठ्ठा करके घासफूस को।
घर अपना बनाए खिसकोली॥
कभी ये लड़ती, कभी झगड़ती।
बात अपनी मनाए खिसकोली॥

पास आकर दूर भागती।
यूँ सबको भरमाए खिसकोली।
सीधी आकर उल्टी भागे।
वाहन को अटकाए खिसकोली।

जब कोई भी संकट दिखे।
लगातार चिल्लाए खिसकोली।
अजब-गजब के खेल दिखाती।
हर मन को भाए खिसकोली॥

चाहेंगे ही

हो जाओ चाहे कितने बड़े,
बचपन के दिन याद आएँगे ही।

माँ के हाथों से बने हैं
ये पकवान सबको भाएँगे ही।

जब भी लेते हैं प्रभु का नाम
कुछ न कुछ तो पाएँगे ही।

जब आपने बुलाया है दिल से
थोड़ी देर ही सही, आएँगे ही।

देखते हैं कब तक सोएँगे
समय आने पर जागेंगे ही।

रहोगे बहुत भोले बनकर
तो लोग तुमको ठगेंगे ही।

बोए हैं बीज तो उगेंगे ही
फिर उन पर फल लगेंगे ही।

तोड़ते रहे यूँ ही विश्वास
तो सब तुमसे दूर हटेंगे ही।

चाहे जितना मुँह मोड़ लो
हम तो तुम्हें चाहेंगे ही।

क्या पता?

अभी-अभी तो शुरू हुआ है, क्या-क्या होगा क्या पता?
ज़िन्दगी का एपीसोड है, कब क्या होगा क्या पता?

कैसे-कैसे दृश्य रहेंगे, क्या-क्या होगी उसमें बात?
उसमें साथ निभाने को, कौन-कौन होंगे क्या पता?

किस-किससे है लेना-देना, किस-किससे है मेल-जोल?
किन-किन से सम्बन्ध जुड़ेंगे? कैसे रहेंगे क्या पता?

कहाँ - कहाँ पर जाना होगा, किस-किससे होगी मुलाकात?
कौन-कौन से पड़ाव होंगे? कहाँ है मंज़िल क्या पता?

कब-कब कैसी स्थितियाँ होंगी, तब-तब होगा किसका साथ?
जब-जब होगी जिसकी जरूरत, कौन पास होगा क्या पता?

क्या-क्या करना होगा? भाग्य-प्रबल होगा या पुरुषार्थ?
प्रिय करेंगे या हित का होगा परिणाम क्या पता?

मंज़िल

सूरज है गतिमान
कभी राशि में
कभी नक्षत्र में
पृथ्वी है गतिशील
स्वयं घूमती
लगाए सूरज का चक्कर
सर्व तारे, उल्कापिण्ड,
ग्रह, उपग्रह
पूरा संसार है भ्रमणशील।

शरीर भी घूमे
मन भी चंचल
वाणी बहती रहती
विचारों की दौड़
स्मृति एवं कल्पनाएँ।

रात्रि में सपनों की होड़
भाव बदलते रहते
व्यक्ति भाग रहा है
इस गति में
कोई स्थिर भी है
गति संसार की तो
स्थिरता 'स्व' की यात्रा है

चैतन्य की यात्रा है
आत्मा की यात्रा है
परमात्मा की यात्रा है

दुनिया में तू
बनकर आया है मेहमान
जीवन-यापन के लिए
कुछ होना है गतिमान
पर स्थिरता में ही
जीवन की मंज़िल है श्रीमान्...।

नया आदमी

जो सिखा वही सिखा रहे हो,
इसमें नया क्या दिखा रहे हो?
जिन राहों से चलकर आए,
उसी पर हमको चला रहे हो।

इन राहों पर चलकर,
नहीं हो रहा परिवर्तन।
अब कुछ ऐसा लिखें,
जो सुधारे आदमी का वर्तन।

जो शिक्षा तुम देते आए,
वह सबको संकीर्ण बनाए।
आओ नया अध्याय लिखें,
जो मानवता का पाठ पढाए॥

जिस शास्त्र को पढ़ते आए,
वह मानव को उलझाए।
आओ नया शास्त्र बनाएँ,
जो भाईचारा व प्रेम सिखाए॥

रीति-रिवाज जो चलते आए,
कुछ हो गए उसमें बेकार।

कुछ को हम घसीट रहे हैं,
आओ दें नवीन आकार ॥

सिखाने दो नई शिक्षा,
बनाने दो रीति-रिवाज।
लिखने दो नए-शास्त्र,
जो बुलन्द करें जीवन की आवाज ॥

नया जमाना, नया आदमी,
नई राह बनाएगा।
पुनः अपना विवेक जगाकर,
इस दुनिया को महकाएगा ॥

स्वीकार

कहीं मान मिला
कहीं सम्मान मिला
कहीं जश, कहीं अपजश
कहीं पूरी हुई अपेक्षा
कहीं पर हुई उपेक्षा
कहीं रोष, कहीं जोश
कहीं प्रिय मिला
कहीं अप्रिय।

कोई अच्छा मिला
कोई बुरा मिला
कोई सज्जन मिला
कोई दुर्जन मिला
कोई बड़ा, कोई छोटा
कोई अनुकूल मिला
कोई प्रतिकूल मिला।

कोई साधु मिला
कोई प्रेरक मिला
किसी ने सुख दिया
किसी ने दु:ख दिया
किसी ने सलाह दी
किसी ने आशीर्वाद।

कुछ काल से
कुछ स्वभाव से
कुछ पुरुषार्थ से
कुछ नियति से
चाहे आकार
चाहे निराकार
जो भी मिला
जैसा मिला
जहाँ भी मिला
जो भी मिला
यों तो कर रहा हूँ
सब स्वीकार।

फिर भी नहीं
कर पा रहा हूँ
कुछ बातों
कुछ व्यक्तियों
का स्वीकार
इसलिए स्वप्न
नहीं हो पा रहा
साकार।

बीज

जो भी आया जीवन में
जो भी मिला राह में
जिससे बाँधे सम्बन्ध
जिनसे हुई मित्रता
जिनसे हुआ व्यवहार
जिनसे हुई रिश्तेदारी
कहीं बाजार में. कहीं कचहरी
कहीं रास्ते में, कहीं जन-स्थान
कहीं सभाओं में, कहीं मेलों में
कहीं शहर में, कहीं गाँव में।

कोई पूज्य है, कोई वन्दनीय
कोई बुजुर्ग है, कोई छोटा
कोई सम्माननीय, कोई मित्र
कोई नेता, कोई रिश्तेदार
कोई दाता, कोई याचक
कोई पड़ोसी।

जो है जानवर और पक्षी
जो हैं पेड़ और पौधे
जो है जड़ और चेतन
जो है दृश्य और अदृश्य।

सबमें बोया बीज
मान का सम्मान का
स्नेह और मित्रता का
विश्वास और दायित्व का
अभय और प्रेम का।

उसी से उग आए हैं
जीवन में खुशियों एवं आनन्द के
शान्ति एवं शुभ भाव के
स्नेह और सुरक्षा के
पेड़-पौधे
जो भी बीज उगाए
वही फल मैंने पाए।

तू कहे तो

तू कहे तो जग जाऊँ, तू कहे तो सो लूँ।
तू कहे तो चुप रहूँ, तू कहे तो बोलूँ।

इस सीने में क्या भरा है, क्या मैं तुमको बोलूँ,
तू कहे तो बन्द रखूँ, तू कहे तो खोलूँ।

मेरा मन ये प्याज जैसा, परत जैसी हैं बातें,
तू कहे तो रहने दूँ, तू कहे तो छोलूँ।

तन मेरा ये तेरी अमानत, लगता है ये भोलू,
तू कहे तो शान्त रहूँ, तू कहे तो डगमग डोलूँ।

मेरा दिल ये पवन का झोंका, चलता होलूँ-होलूँ,
तू कहे तो मन्द रहूँ, कहे तो इत उत झोलूँ।

तेरे प्रति स्नेह अपार, बड़ी-बड़ी संवेदना,
तू कहे तो मान लूँ, तू कहे तो तोलूँ।

जीवन है ये तेरे हवाले, चाहे जैसा जी लूँ,
तू कहे तो हँस पड़ू, तू कहे तो रो लूँ।

एम्ब्यूलन्स

यहाँ से वहाँ
तीव्र सायरन देती
तेज गति से
दौड़ रही एम्ब्यूलन्स
भीड़ और ट्राफिक में भी
निकाल लेती है रास्ता
क्योंकि होता है
किसी की जान का वास्ता
और बचा लेती है
जान किसी मानव की
काश !... कोई एम्ब्यूलन्स
ऐसी भी आए
जो बिछौने पर पड़ी
लँगड़ाती, सहमी, डरी हुई
अपने अस्तित्व को
खोती मानवता
को बचाए
और उसे स्वस्थ करने
किसी मानवता के
अस्पताल पहुँचाए।

वफादार

कभी पानी मिलता है
कभी रोटी मिलती है
कभी दूध-बिस्कुट मिलते हैं।

कभी स्नेह मिलता है
कभी कुछ नहीं मिलता
कभी डॉट मिलती है
कभी फटकार मिलती है।

कभी उठा दिया जाता हूँ
कभी बैठा दिया जाता हूँ
मैं हूँ गली का कुत्ता
हमेशा आस-पास रहता हूँ
जो भी मिले स्वीकार करता हूँ
सदा आपका वफादार रहता हूँ।

कौन?

वे दिव्य थे, जिन्हें श्रीराम मिल गए,
इस जहाँ में अब मर्यादा की वाणी कौन सुनाएगा?

वे पुण्यशाली थे, जिन्हें श्रीकृष्ण मिल गए,
इस जहाँ में अब प्रेम का पाठ कौन पढ़ाएगा?

वे भाग्यशाली थे, जिन्हें मिली बुद्ध की शरण,
इस जहाँ में अब करुणा के स्रोत कौन बहाएगा?

वे धन्य थे, जिन्हें महावीर का साथ मिला,
इस जहाँ में अब अहिंसा से जीना कौन सिखाएगा?

वे विरले थे जिन्हें, गुरुनानक का साथ मिला,
इस जहाँ में वाहेगुरु का सच्चा रूप कौन बताएगा?

वे बड़भागी थे, जिन्हें पतजंलि से गुरु मिले,
इस जहाँ में अब योग के आनन्द से कौन मिलाएगा?

वे कृपापात्र थे, जिन्हें गोरख से नाथ मिले,
इस जहाँ में अब जोग के खेल कौन रचाएगा?

वे विशिष्ट थे जिन्हें, बलशाली हनुमान मिले,
इस जहाँ में अब भक्ति की शक्ति कौन जगाएगा?

मत करना

फकीरों के वेश में कभी-कभी आते हैं भगवान।
कुछ दे न सको तो उनका अपमान मत करना।

कहीं बनावट, कहीं दिखावट, कहीं मिलावट चल रही।
आँखों से दिखती हर बात का स्वीकार मत करना।

कहीं लोहे का तो, कहीं सोने का वजन होता है
हर व्यक्ति को एक ही कीमत से तोला मत करना।

बड़ी मुश्किल एवं नाजों से बड़ा किया है तुम्हें।
मात-पिता की बातों का इन्कार मत करना ॥

घर आँगन में बैठाओ या मन के आँगन में।
बहुत संकोची हूँ, दरवाजा बन्द मत करना।

बड़ी मुश्किल से मिलता है किसी जागृत का सत्संग।
बड़े अमूल्य हैं ये पल, इन्हें बेकार मत करना।

सभी रिश्तों को मिलाकर बनाया रब ने एक रिश्ता।
मित्रों के साथ कभी रूखा व्यवहार मत करना ॥

तू बड़ा है तो बड़प्पन अपने पास रख।
थोड़े नासमझ हैं, हमसे बड़ी बात मत करना ॥

डर लगता है

साथ खेले, साथ घूमे, साथ-साथ चल रहे।
कोई पीछे न छूट जाए, डर लगता है ॥

खूब पढ़े साल भर मेहनत की दिन-रात।
अनुत्तीर्ण न हो जाएँ कहीं, डर लगता है ॥

बहुत करवाई अजमाइश, तब जमी है शाख।
कहीं विश्वास न टूट जाए, डर लगता है।

सिंचन और जतन से, खिला संस्कृति का बाग।
नई सोच इसे उजाड़ न दे, डर लगता है।

कुदरत ने दी है हमें, हरी-भरी सृष्टि।
अब नष्ट न कर दे आदमी, डर लगता है।

विविधता में एकता है हमारी पहचान।
टूट न जाए एकता, डर लगता है।

दिन-रात पास रखा, इनको किया बड़ा।
अब दूर न हो जाएँ हमसे, डर लगता है।

अलग-अलग

कहने को सब एक हैं, पर सब अलग-अलग हैं,
दुनिया सबकी एक है, पर सबकी अलग-अलग है।

विराट सत्य को सब धर्मों ने थोड़ा-थोड़ा पाया,
धर्म सबका एक है, पर सम्प्रदाय अलग-अलग हैं

जैसी जिसकी रुचि, अलग-अलग सब खाएँ
भूख सबकी एक है, पर भोजन अलग-अलग है।

श्रेष्ठ मानकर राह अपनी, चल रहे हैं सारे,
मंज़िल सबकी एक है, पर राहें अलग-अलग हैं

मानव हो या पेड़, या हो कोई जानवर,
पानी सबका एक है, पर प्यास अलग-अलग है।

छोटा हो या बड़ा, वही जीवन का आधार,
हवा तो सबकी एक है, पर श्वास अलग-अलग है।

रंग-बिरंगे खिल रहे और सबको महकाएँ,
यूँ तो गुलशन एक है, पर गुल अलग-अलग हैं।

शब्दों की बैशाखी लेकर चलते सबके भाव,
बातें तो यूँ एक सी, पर भाषा अलग-अलग है।

रोज सवेरे सूरज आकर नया दिन है देता,
तारीख सबकी एक है, पर दिन अलग-अलग है।

विधाता ने भेजा हमें, एक ही जमीं पर,
धरती सबकी एक है, पर रहनी अलग-अलग है।

कर्मों के बाजार में घूम रहे हैं सारे,
बाजार सबका एक है, पर खरीदी अलग-अलग है।

आओ, ज़िन्दगी हम बात करें

और कोई बात करें ना करें,
आओ ज़िन्दगी हम बात करें।

कोई दूर, कोई पास, अलग-अलग है वास्ता।
सबसे अधिक तुझसे है वास्ता, आओ ज़िन्दगी हम बात करें।

इस जहाँ में यूँ तो आई, पढ़ने में हजारों किताबें।
सबसे बड़ी किताब तू ही है, आओ ज़िन्दगी हम बात करें।

कुछ लोग, कुछ वाकिए, यादें बनकर आते हैं।
पूरा अतीत तुझमें समाया, आओ ज़िन्दगी हम बात करें।

आते हैं कुछ भावित करने, कुछ करने प्रभावित।
एक तू ही है स्वभाविक आओ ज़िन्दगी हम बात करें।

खट्टे-मीठे, कड़वे, नमकीन, बहुत से रस हैं जहाँ में।
पर तू है सबरस, आओ ज़िन्दगी हम बात करें।

कुछ आरजू, कुछ ख्वाहिशें, कुछ तमन्नाएँ अभी भी बाकी हैं।
तू ही तो है भविष्य, आओ ज़िन्दगी हम बात करें।

कभी मान, कभी अपमान, कभी होता सम्मान है।
और क्या-क्या मिलेगा, आओ ज़िन्दगी हम बात करें।

नहीं देखा

सुबह होते ही देता है दस्तक दरवाजे पर,
सूरज को मैंने कभी रूठा नहीं देखा।

लगी रहती हैं अहर्निश भरने को सागर,
नदियों को मैंने कभी थकते नहीं देखा।

पतझड़ में ही आते हैं, पतझड़ में चले जाते हैं,
कुछ लोगों के जीवन में कभी सावन नहीं देखा।

जो भी पास आता है, उसको महका देते हैं,
फूलों में मैंने कभी भेद नहीं देखा।

जब भी आता है दुःख, मुस्कुराहटों से भगा देते हैं,
कुछ लोगों को मैंने कभी गमगीन नहीं देखा।

चलते-चलते बात करना, चलते ही बरसना,
बादलों को मैंने कभी रुकते नहीं देखा।

जड़ हो या चेतन, सबका आधार बनी,
धरती को मैंने कभी ना कहते नहीं देखा।

महावीर मार्ग

मैं चल रहा था
भगवान महावीर मार्ग पर
एक दुकान में
बिक रहा था माल
झूठ बोलकर
आगे किसी दुकान
पर बिक रही थी
कीट-पतंगे मारने
की दवाई
कुछ दुकानों पर
बिक रहे थे डुप्लीकेट ब्राण्ड
और हाँ, फिर अश्लील
पुस्तकों की दुकान
फिर आई दवा की दुकान
जिस पर बोर्ड लटक रहे थे
ताकत की दवाइयों के
कुछ आगे एक बैंक आया
जिसमें जमा है करोड़ों
की डिपोजिट
उससे अड़कर थी
एक सरकारी कचहरी
जिसमें चल रही थी
रिश्वतखोरी
चन्द कदम पर

प्रतिष्ठित वकील की ऑफिस
जिसमें खर्चा कर
न्याय दिलाने का वादा
उससे अगली दुकान
पर काम कर रहे थे
बाल मजदूर
थोड़ा आगे एक धर्मस्थान
आया जिसमें धर्मगुरु
अपने धर्म को सर्वश्रेष्ठ
बता रहे थे।
इसी तरह की और
दुकानों को देखता
मैं चलता रहा
इतने में भगवान महावीर मार्ग
पूरा हो गया
हा, अन्त में था
भगवान महावीर का मन्दिर
मैं नहीं गया
डर के मारे अन्दर।